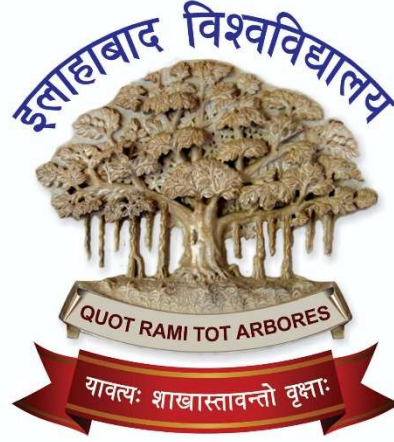


Learning Outcome Based Curriculum of Two-Years Master of Arts (Sanskrit)

(M.A.- Sanskrit)

अधिगम प्रतिफल आधारित

द्वि-वर्षीय कला परास्नातक (संस्कृत) पाठ्यक्रम



संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग

कला संकाय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज - 211002

Department of Sanskrit, Pali, Prakrit & Oriental Languages

FACULTY OF ARTS

UNIVERSITY OF ALLAHABAD, PRAYAGRAJ 211002

प्र.पा. 102
प्रो. (डॉ.) प्रयाग नारायण सिंह
आचार्य तथा अध्यक्ष
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज-211002, उ.प्र.

प्रस्तावना

विभाग-परिचय:

संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और सबसे बड़े विभागों में से एक है। संस्कृत विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्वावधान में म्योर सेंट्रल कॉलेज के एक विभाग के रूप में 1873 ई. में अस्तित्व में आया। इसकी स्थापना इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887) से 14 वर्ष पूर्व हुई थी। इस विभाग के संस्थापक और अध्यक्ष प्रो. आदित्य राम भट्टाचार्य (1873-1902) थे।

संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग के अनुसंधान प्रमुख क्षेत्र को तीन मुख्य धाराओं में विभाजित किया गया है - वेद और वैदिक अध्ययन, साहित्य, साहित्यशास्त्र और भारतीय दर्शन। इसके अलावा हमारे शोध विद्वानों द्वारा कई अन्य क्षेत्रों का अन्वेषण किया गया है, जैसे वास्तुकला, मानवाधिकार, रक्षा-अध्ययन, पर्यावरण-अध्ययन, पर्यटन, वनस्पतिविज्ञान, तन्त्रशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, भूविज्ञान और भू-जल विज्ञान, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कानून, इतिहास, भूगोल, संस्कृत व्याकरण, आपदा नियन्त्रण, सतत् सन्धारण और पौराणिक साहित्य।



इस विभाग ने कई रत्नों को जन्म दिया है जिन्होंने शिक्षा के साथ-साथ प्रशासन के क्षेत्र में भी नाम और प्रसिद्धि अर्जित की है जैसे- महामहोपाध्याय प्रो. गंगा नाथ झा, प्रथम डी. लिट. तथा राज्य परिषद् के सदस्य थे। उन्हें कैपबेल

पदक, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन, मानद सदस्य- रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन, नाइट बैचलर की उपाधि प्रदान की गई। इसके साथ ही उनके द्वारा प्रदत्त ग्रन्थालय तथा उनके संस्कृत अनुसंधान क्षेत्र में दिए गए अवदान हेतु राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा शोध हेतु समर्पित “गंगानाथ झा परिसर” की स्थापना सन् 1943 में की गई।

विभागीय शिक्षकों तथा छात्रों के द्वारा यूजीसी आईसीपीआर इस्सर तथा अन्य शोध संस्थाओं से शोध हेतु परियोजनाएं प्राप्त की। विभाग न केवल संस्कृत अपितु अवेस्ता, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, आदि भाषाओं के अध्ययन हेतु भी अवसर प्रदान करता है। विभागीय शिक्षक वर्ग न केवल भारत अपितु विदेशों में भी सम्मेलनों में प्रतिभागिता कर भारतीय ज्ञान परंपरा तथा गौरव का प्रचार प्रसार करते हैं।

विभागीय छात्रों का प्रशासनिक सेवाओं, शैक्षिक सेवाओं के साथ-साथ भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद पर भी चयन होता है।

द्वि-वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

कार्यक्रम का मुख्य जोर नेतृत्व और नीति विकास पर है, जो शिक्षकों को स्कूल प्रशासक, नीति विश्लेषक या पाठ्यक्रम विशेषज्ञ जैसी भूमिकाएँ निभाने के कौशल से अभिवृद्धि करता है। शोध पद्धतियों पर पाठ्यक्रम स्नातकों को शैक्षिक प्रथाओं को प्रभावित करने और शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम बनाते हैं। संस्कृत भाषा भारतीय ज्ञान परम्परा की मूल आधारशिला है। यह केवल एक भाषा नहीं, अपितु भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चेतना की संवाहिका है। परास्नातक स्तर पर संस्कृत का अध्ययन करना न केवल शास्त्रीय ज्ञान के गहन अन्वेषण का माध्यम बनता है, अपितु यह विद्यार्थियों को भारत की प्राचीनतम बौद्धिक परंपराओं से जोड़ता है।

परास्नातक में संस्कृत पढ़ने के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- **शास्त्रीय ग्रन्थों का गहन अध्ययन:** विद्यार्थी वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, दर्शन, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र एवं वैदिक वाङ्मय जैसे ग्रन्थों का मूल संस्कृत भाषा में अध्ययन कर उनके गूढ़ भावों को समझ सकते हैं।
- **भारतीय दर्शन और विचार परंपरा की समझ:** न्याय, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा जैसे दर्शनों का मूल रूप में अध्ययन कर विद्यार्थी भारतीय तात्त्विक चिन्तन की गहराई तक पहुँचते हैं।
- **संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता को समझना:** संस्कृत व्याकरण (विशेषतः पाणिनीय प्रणाली) भाषाविज्ञान का अद्भुत उदाहरण है। इसका अध्ययन भाषा की संरचना और व्याकरणिक नियमों की वैज्ञानिक दृष्टि से समझ प्रदान करता है।
- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:** संस्कृत का अध्ययन हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं और आध्यात्मिक धरोहर के संरक्षण में सहायक होता है।

- **अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण का विकास:** परास्नातक स्तर पर विद्यार्थी अनुसंधान की दिशा में अग्रसर होते हैं। संस्कृत में शोध की व्यापक संभावनाएँ हैं – जैसे शास्त्रों का भाष्य, पाठ-संपादन, तुलनात्मक अध्ययन, भाषा विश्लेषण आदि।
- **आधुनिक उपयोग और अनुप्रयोग:** संस्कृत आज के समय में भी कम्प्यूटर विज्ञान, योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, न्यायशास्त्र आदि में प्रासंगिक है। विद्यार्थियों को इसके आधुनिक प्रयोग की दिशा में भी प्रशिक्षित किया जाता है।
- **समालोचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास:** संस्कृत साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों में विश्लेषण, मूल्यांकन और मौलिक लेखन की क्षमता विकसित करता है।
- **राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान:** संस्कृत के विद्वानों की माँग न केवल भारत में, अपितु विदेशों में भी निरंतर बढ़ रही है। परास्नातक स्तर पर संस्कृत पढ़ने से विद्यार्थियों के लिए अकादमिक, अनुवाद, शिक्षण और शोध के अनेक द्वार खुलते हैं।
- **निष्कर्षतः,** परास्नातक स्तर पर संस्कृत अध्ययन का उद्देश्य केवल एक भाषा का ज्ञान प्राप्त करना नहीं, अपितु भारत के बौद्धिक, सांस्कृतिक, नैतिक और वैज्ञानिक मूल्यों का समग्र रूप से आत्मसात करना है। यह अध्ययन विद्यार्थियों को एक सशक्त, जागरूक और मूल्यपरक जीवन की ओर अग्रसर करता है।

स्नातकोत्तर उपाधि के लिए अधिगम परिणाम विवरणक और कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes - POs):

स्नातकोत्तर उपाधि उन छात्रों को योग्य बनाती है जो व्यावसायिक अभ्यास, अनुसंधान और छात्रवृत्ति के लिए और आगे की शिक्षा के मार्ग के रूप में विभिन्न संदर्भों में उन्नत ज्ञान का प्रयोग कर सकते हैं। इस स्तर के स्नातकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अनुसंधान या व्यावसायिक अभ्यास अथवा आगे की शिक्षा के लिए विशिष्ट ज्ञान और कौशल रखें और उसका प्रदर्शन करें। मास्टर डिग्री धारकों से अपेक्षा की जाती है कि वे स्थापित सिद्धांतों और सिद्धांतों को ज्ञान के किसी क्षेत्र या व्यावसायिक अभ्यास में लागू करने की क्षमता प्रदर्शित करें।

विवरणक	ज्ञान और समझ: स्नातकों को निम्नलिखित का अधिग्रहण प्रदर्शित करने में सक्षम होना चाहिए।
P.O. 1.	गहन विषयज्ञान (Disciplinary Knowledge) संस्कृत भाषा, साहित्य, और दर्शन की गहन समझ प्राप्त करना, जिससे विद्यार्थी शिक्षण, लेखन, शोध या अन्य संबंधित क्षेत्रों में योगदान दे सकें।
P.O. 2.	संज्ञात्मक कौशल (Cognitive Skills) विश्लेषणात्मक, तार्किक, और आलोचनात्मक विचारधारा का विकास जिससे जटिल ग्रंथों और अवधारणाओं को समझने और विश्लेषण करने में सहायता मिले।
P.O. 3.	जीवन पर्यंत अधिगम (Lifelong Learning) शास्त्रीय अध्ययन की पृष्ठभूमि में आजीवन सीखते रहने की प्रवृत्ति और आत्मविकास की भावना।
P.O. 4.	नैतिक मूल्य और सामाजिक चेतना (Ethical and Social Understanding) भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त नैतिक मूल्यों का आत्मसात और सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता।
P.O. 5.	शोध और नवाचार (Research and Innovation) मौलिक विचारों का सृजन, प्राचीन ग्रंथों पर आधारित शोध कार्य का संपादन, और संस्कृत साहित्य में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करना।
P.O. 6.	संचार कौशल (Communication Skills) संस्कृत के साथ-साथ हिंदी और अंग्रेजी में भी प्रभावी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना।
P.O. 7.	पेशेवर क्षमता (Professional Capacity) शिक्षण, अनुवाद, शोध, प्रशासन, और अन्य अकादमिक या गैर-अकादमिक क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता का विकास।

Program Specific Outcomes (PSO) – कार्यक्रम अधिगम परिणाम

क्रम	कार्यक्रम अधिगम परिणाम (Program's Outcomes)	Bloom's स्तर	व्याख्या
PSO1	विद्यार्थी संस्कृत भाषा, व्याकरण, साहित्य, वेद, दर्शन एवं संस्कृति की गहरी समझ विकसित करेगा।	Understand	भाषा और शास्त्रीय परंपरा का सैद्धांतिक ज्ञान।
PSO2	विद्यार्थी शास्त्रग्रंथों का पाठ, व्याख्या, तथा आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होगा।	Analyze/ Evaluate	भाष्य, मीमांसा, न्याय इत्यादि के विवेचन कौशल।
PSO3	भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक विचारधारा से जोड़ने की क्षमता विकसित करेगा।	Apply/ Evaluate	तुलनात्मक अध्ययन और समन्वय दृष्टि।
PSO4	संस्कृत के विभिन्न उपभाषाओं, व्याकरणिक तत्त्वों तथा काव्यशास्त्र का व्यावहारिक उपयोग कर सकेगा।	Apply	भाषा एवं शास्त्र का व्यावहारिक अनुप्रयोग।
PSO5	शोध, अनुवाद, एवं शिक्षण के क्षेत्र में आवश्यक कौशल अर्जित करेगा।	Create	मौलिक अनुसंधान और अध्यापन क्षमता।

क्रम	कार्यक्रम अधिगम परिणाम (Program's Outcomes)	Bloom's स्तर	व्याख्या
PSO6	वैदिक, दार्शनिक, एवं साहित्यिक ग्रंथों की समीक्षा में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाएगा।	Evaluate/ Create	आलोचनात्मक सोच व आत्मनिर्भर विश्लेषण।

पाठ्यक्रम संरचना

द्विवर्षीय परास्नातक कार्यक्रम (संस्कृत)

प्रथम सेमेस्टर

क्रम सं.	पाठ्यक्रम क्रमांक	पाठ्यक्रम शीर्षक	क्रेडिट
प्रथम सेमेस्टर		कुल 20 क्रेडिट	
विषय आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम		(20 क्रेडिट)	
1.	SAN-501	ऋग्वैदिक सूक्त	4
2.	SAN-502	पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश	4
3.	SAN-503	भारतीय दर्शन न्याय एवं वेदान्त	4
4.	SAN-504	संस्कृत व्याकरण	4
5.	SAN-505	संस्कृत काव्यशास्त्र	4

Paper – 1: Course Code SAN – 501

Title of Course – ऋग्वैदिकसूक्तानि

इकाई – 1 वैदिकवाङ्मयस्य-विशदविवेचनम्	12 अंक
(भेदोपभेदपूर्वकं वेदानां स्वरूपं महत्त्वञ्च, वेदानां काल-निर्धारणम्, वेदाङ्गवैदिकवाङ्मयस्य संक्षिप्तः परिचयः)	
इकाई – 2 अग्निः (1.1), सूर्यः (1.125), इन्द्रः (2.12)	12 अंक
इकाई – 3 वरुणम् (1.25), उषस् (3.61), नासदीयम् (10.129)	12 अंक
इकाई – 4 वैदिकदेवतानां स्वरूपं समीक्षात्मकाः प्रश्नाश्च	12 अंक
इकाई -5 पदपाठवैदिकस्वराः वैदिकव्याकरणस्य सामान्यः परिचयः	12 अंक

सन्दर्भग्रन्थाः -

- ऋक्सूक्तसंग्रहः, हरिदत्तशास्त्री (व्याख्याकार), साहित्य भण्डार, मेरठ।
- न्यूवैदिकसलेक्शन(भाग-१-२), के. एन. एस. तैलंगतथाचौबे, भारतीयविद्याभवन, वाराणसी, १९८०
- वेदामृतमञ्जूषिका, प्रयागनारायणमिश्र, प्रकाशन केन्द्र , लखनऊ , वर्ष २००४
- वैदिकसाहित्यकाइतिहास, राजेश्वरशास्त्रीमुसलगाँवकर, चौखम्भासंस्कृतसंस्थान, वाराणसी।

Course Outcomes (C.O.)

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcomes (CO)	Bloom's Domain
इकाई-1	वैदिकवाङ्मयस्य विशद विवेचनम् (वेदों का स्वरूप, भेद, महत्त्व, वेदान्त, काल निर्धारण, वेदाङ्ग)	छात्र वेदों के स्वरूप, वर्गीकरण तथा उनके ऐतिहासिक एवं भाषिक महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे।	ज्ञान (Knowledge)
इकाई-2	अग्नि, सूर्य, इन्द्र सूक्त (ऋग्वेद चयन)	विद्यार्थी प्रमुख वैदिक देवताओं के गुण, कार्य एवं प्रतीकात्मकता को समझ सकेंगे।	समझ (Comprehension)
इकाई-3	वरुण, उषस्, नासदीय सूक्त	विद्यार्थी दार्शनिक, नैतिक एवं सृष्टितत्व संबंधी विचारों का विश्लेषण कर सकेंगे।	विश्लेषण (Analysis)
इकाई-4	वैदिक देवतास्वरूप एवं समीक्षात्मक प्रश्न	विद्यार्थी वैदिक देवताओं की अवधारणा का समालोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।	मूल्यांकन (Evaluation)
इकाई-5	पदपाठ, वैदिक स्वर, वैदिक व्याकरण का परिचय	विद्यार्थी वैदिक भाषिक संरचना, पदपाठ-पद्धति एवं स्वर-प्रणाली को व्यावहारिक रूप में समझ सकेंगे।	अनुप्रयोग (Application)

PO-CO Mapping Table

CO Code	Course Outcome	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO1	वेदों का स्वरूप व भेद समझना	3	2	3	1	2
CO2	वैदिक देवताओं के सूक्तों का अर्थ-विश्लेषण	2	3	3	2	2
CO3	दार्शनिक दृष्टिकोण का विवेचन	2	3	3	2	3
CO4	देवतास्वरूप की समीक्षात्मक व्याख्या	1	3	3	3	3
CO5	पदपाठ, स्वर व व्याकरणिक ज्ञान का अनुप्रयोग	3	2	1	3	2

Paper II Course Code – SAN – 502

Title of Course – पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश

पालि प्राकृत अपभ्रंश संग्रह पुस्तक के निम्नलिखित अंश

इकाई – 1 मायादेविया सुपिनम्, गोतमस्स उप्पादो, महाभिनिक्खमनम्, बावेरुजातकम्, ज्वसकुणजातकम् ससजातकम्

12 अंक

इकाई – 2 धम्मपदसंगहो, धनियसुत, महापजापतिगोतमीगाथा, मालुक्यपुतगाथा, आशोकाभिलेख, पटिच्चसमुत्पादो,

12 अंक

इकाई – 3 – गाहासतसई, स्वप्नवासवदत्तम्, कर्पूरमंजरी की प्राकृते

12 अंक

इकाई – 4 – मृच्छकटिकम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्राकृते प्रथम अङ्क

12 अंक

इकाई – 5 – अपभ्रंश मुक्तक संग्रह तथा भाषा वैज्ञानिक टिप्पणी

12 अंक

Course Outcomes (COs): प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcome (C.O.)
इकाई – 1	मायादेविया सुपिनम्, गोतमस्स उप्पादो, महाभिनिक्खमनम्, बावेरुजातकम्, ज्वसकुणजातकम्, ससजातकम्	विद्यार्थी प्राचीन प्राकृत कथाओं और जटकों/सुपिनों का साहित्यिक एवं दार्शनिक महत्व समझेंगे।
इकाई – 2	धम्मपदसंगहो, धनियसुत, महापजापतिगोतमीगाथा, मालुक्यपुतगाथा, आशोकाभिलेख, पटिच्चसमुत्पादो	विद्यार्थी बौद्ध एवं जैन साहित्य, गाथा-संग्रहों और ऐतिहासिक शिलालेखों का भाषिक और सांस्कृतिक विश्लेषण कर सकेंगे।
इकाई – 3	गाहासतसई, स्वप्नवासवदत्तम्, कर्पूरमंजरी की प्राकृते	विद्यार्थी प्राकृत नाटकों और गीतिकाव्य की शैली, भाषा और सौंदर्यबोध को पहचानेंगे।
इकाई – 4	मृच्छकटिकम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्राकृते	विद्यार्थी क्लासिक प्राकृत नाटकों की संरचना, पात्रविन्यास और शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
इकाई – 5	अपभ्रंश मुक्तक संग्रह तथा भाषा वैज्ञानिक टिप्पणी	विद्यार्थी अपभ्रंश काव्य, उसके लक्षण और भाषा-विज्ञान

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcome (C.O.)
		संबंधी टिप्पणियों को समझकर अनुप्रयोग कर सकेंगे।

PO–CO Mapping Table

CO Code	संक्षिप्त Course Outcome	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO1	प्राचीन प्राकृत कथाएँ, जटकों और सुपिनो का साहित्यिक और दार्शनिक महत्व समझना	3	2	3	1	2
CO2	बौद्ध और जैन गाथा-संग्रहों तथा ऐतिहासिक शिलालेखों का भाषिक और सांस्कृतिक विश्लेषण करना	3	3	3	2	2
CO3	प्राकृत नाटकों और गीतिकाव्य की शैली, भाषा और सौंदर्यबोध को पहचानना	2	3	3	2	2
CO4	क्लासिक प्राकृत नाटकों की संरचना, पात्रविन्यास और शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण करना	2	3	2	3	2
CO5	अपभ्रंश काव्य, उसके लक्षण और भाषा-विज्ञान संबंधी टिप्पणियों को समझकर अनुप्रयोग करना	3	2	2	3	3

Paper III Course Code–SANS-503 Title of Course – भारतीयदर्शनम्– न्यायः वेदान्तश्च

Course Contents:

Unit I- तर्कभाषा– प्रारम्भतः कारणलक्षणपर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit II- तर्कभाषा–प्रमाणलक्षणम्, प्रत्यक्षप्रमाणम्	12 अंकाः
Unit III- वेदान्तसारः- खण्डसंख्या 1 तः 10 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit IV- वेदान्तसारः- खण्डसंख्या 11 तः 35 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit V- वेदान्तसारः-खण्डसंख्या 36 तः 59 पर्यन्तम्	12 अंकाः

Recommended Readings:

- तर्कभाषा-केशवमिश्र. आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि(व्याख्याकार) . वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत ऑफिस, 1963.
- तर्कभाषा केशवमिश्र.आचार्य बदरीनाथ शुक्ल(व्याख्याकार). वाराणसी: मोतीलाल बनारसीदास,1968.
- तर्कभाषा (समीक्षात्मक भूमिका, भाषा अनुवाद, व्याख्यात्मक टिप्पानी सहित) केशव मिश्रा प्रणीता. श्रीनिवास शास्त्री. मेरठ: साहित्य भण्डार,1972.
- हरिकृष्णदास. वेदान्तदर्शन. गोरखपुर: गीताप्रेस,2009.
- वेदान्तसार- सदानन्द. सन्त नारायण श्रीवास्तव(व्याख्याकार) .इलाहाबाद: पीयूष प्रकाशन, 1968.
- वेदान्तसार-सदानन्द. आचार्यबदरीनाथ शुक्ल(व्याख्याकार). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1979.
- वेदान्तसार-सदानन्द. आचार्य राममूर्ति शर्मा(व्याख्याकार). दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 2001.
- Deutsch, E. *Advaita Vedānta*. Hawaii: University of Hawaii Press, 1969.
- Ghate, Prof. V. S. *The Vedānta*. Pune: Bhandarkar Oriental Research Institute.

Course Outcomes (COs): तर्कभाषा एवं वेदान्तसार:

Unit	विषयवस्तु	Course Outcome (CO)
Unit I	तर्कभाषा- प्रारम्भतः कारणलक्षणपर्यन्तम्	विद्यार्थी तर्कशास्त्र की प्रारंभिक अवधारणाएँ और कारणलक्षण को समझेंगे।
Unit II	तर्कभाषा- प्रमाणलक्षणम्, प्रत्यक्षप्रमाणम्	विद्यार्थी विभिन्न प्रमाणों में विशेषतः प्रत्यक्षप्रमाण का ज्ञान और विश्लेषण कर सकेंगे।
Unit III	वेदान्तसार:- खण्डसंख्या 1 तः 10	विद्यार्थी वेदान्तसार: के प्रारंभिक खण्डों में वर्णित मूल विचारों और दार्शनिक सिद्धांतों को समझेंगे।
Unit IV	वेदान्तसार:- खण्डसंख्या 11 तः 35	विद्यार्थी मध्य खण्डों के दार्शनिक विचारों, उपदेशों और व्यवहारिक निर्देशों का विश्लेषण करेंगे।
Unit V	वेदान्तसार:- खण्डसंख्या 36 तः 59	विद्यार्थी अंतिम खण्डों में वर्णित सम्पूर्ण वेदान्तिक दृष्टिकोण और मोक्षसिद्धान्त को सम्यक् रूप से समझकर उनका मूल्यांकन कर सकेंगे।

PO-CO Mapping Table

CO Code	संक्षिप्त CO	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO1	तर्कभाषा की प्रारंभिक अवधारणाएँ और कारणलक्षण समझना	3	2	2	1	1
CO2	प्रमाणलक्षण और प्रत्यक्षप्रमाण का विश्लेषण करना	3	3	2	2	2
CO3	वेदान्तसार: के प्रारंभिक खण्डों के सिद्धांत समझना	3	2	3	2	2
CO4	वेदान्तसार: के मध्य खण्डों के विचारों का विश्लेषण करना	2	3	3	2	2
CO5	वेदान्तसार: के अंतिम खण्डों में मोक्षसिद्धान्त का मूल्यांकन करना	3	3	3	2	3

Paper IV Course Code – SAN-504

Title of Course –संस्कृत व्याकरण

लघुसिद्धान्त कौमुदी के अधोलिखित प्रकरण

इकाई – 1 – अजन्त पुलिंग-राम, सर्व, विश्वपा, हरि, सखि, पति शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	12 अंक
इकाई – 2 – अजन्त स्त्रीलिंग रमा, मति, गौरी, श्री एवं नपुंसक लिंग ज्ञान, वारि, दधि शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	12 अंक
इकाई – 3 – विश्ववाह, इतम्, राजन्, माघवन्, त्रि, चतुर् शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	12 अंक
इकाई – 4 – भू धातु – लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधिलङ् लकारों में रूप सिद्धि प्रक्रिया	12 अंक
इकाई – 5 – एध् धातु – लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधिलङ् लकारों में रूप सिद्धि प्रक्रिया	12 अंक

Course Outcomes (COs): लघुसिद्धान्त कौमुदी

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcome (CO)
इकाई 1	अजन्त पुलिंग – राम, सर्व, विश्वपा, हरि, सखि, पति शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	विद्यार्थी पुलिंग शब्दों की साधनिका प्रक्रिया और उनके व्याकरणिक नियम समझ सकेंगे।
इकाई 2	अजन्त स्त्रीलिंग – रमा, मति, गौरी, श्री एवं नपुंसक लिंग वारि, दधि शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	विद्यार्थी स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग शब्दों की साधनिका प्रक्रिया का सही प्रयोग सीखेंगे।
इकाई 3	विश्ववाह, इतम्, राजन्, माघवन्, त्रि, चतुर् शब्दों की साधनिका प्रक्रिया	विद्यार्थी अन्य विशेष शब्दों (विशेष संज्ञा और सर्वनाम) की साधनिका प्रक्रिया को पहचानेंगे।
इकाई 4	भू धातु – लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलङ् लकारों में रूप सिद्धि प्रक्रिया	विद्यार्थी भू धातु के विभिन्न लकारों में रूप सिद्धि की प्रक्रिया का अभ्यास करेंगे।
इकाई 5	एध् धातु – लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलङ् लकारों में रूप सिद्धि प्रक्रिया	विद्यार्थी एध् धातु के लकारों में रूप सिद्धि की विधि और व्याकरणिक प्रयोग समझ सकेंगे।

PO–CO Mapping Table

CO Code	संक्षिप्त CO	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO1	पुलिंग शब्दों की साधनिका प्रक्रिया और व्याकरणिक नियम समझना	3	3	2	2	1
CO2	स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग शब्दों की साधनिका प्रक्रिया का अभ्यास करना	3	3	2	2	1

CO Code	संक्षिप्त CO	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO3	अन्य विशेष शब्दों (संज्ञा और सर्वनाम) की साधनिका प्रक्रिया समझना	3	2	2	2	1
CO4	भू धातु के लकारों में रूप सिद्धि की प्रक्रिया का अभ्यास करना	3	3	2	3	2
CO5	एध् धातु के लकारों में रूप सिद्धि की प्रक्रिया समझना और प्रयोग करना	3	3	2	3	2

Paper V Course Code – SAN-505

Title of Course –संस्कृत काव्यशास्त्र

1- काव्यप्रकाश

इकाई – 1 – प्रथम एवं द्वितीय उल्लास (अभिधा पर्यन्त) 12 अंक

इकाई – 2 – द्वितीय उल्लास (लक्षणा से समाप्ति पर्यन्त) एवं तृतीय उल्लास 12 अंक

इकाई – 3 – चतुर्थ उल्लास 12 अंक

इकाई – 4 – नवम उल्लास 12 अंक

इकाई – 5 – दशम उल्लास - अधोलिखित चयनित अलङ्कार – 12 अंक

उपमा, उत्प्रेक्षा, ससन्देह, रूपक, अपहृति, श्लेष, समासोक्ति, निदर्शना, अप्रस्तुतप्रशंसा, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त, दीपक, तुल्ययोगिता, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, व्यजस्तुति, पर्यायोक्त, परिसंख्या, भ्रान्तिमान, संसृष्टि, संकर ।

Course Outcomes (COs): काव्यप्रकाश

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcome (CO)
इकाई – 1	प्रथम एवं द्वितीय उल्लास (अभिधा पर्यन्त)	विद्यार्थी काव्यप्रकाश के प्रारंभिक उल्लास और अभिधा की अवधारणा समझेंगे ।
इकाई – 2	द्वितीय उल्लास (लक्षणा से समाप्ति पर्यन्त) एवं तृतीय उल्लास	विद्यार्थी द्वितीय और तृतीय उल्लास में वर्णित अलंकार और काव्यलक्षण का विश्लेषण कर सकेंगे ।
इकाई – 3	चतुर्थ उल्लास	विद्यार्थी चतुर्थ उल्लास में वर्णित सौन्दर्य, रस और अलंकारों की समझ विकसित करेंगे ।
इकाई – 4	नवम उल्लास	विद्यार्थी नवम उल्लास के माध्यम से सूक्ष्म काव्यलक्षण और भावनात्मक प्रभाव का अध्ययन करेंगे ।

इकाई	विषयवस्तु	Course Outcome (CO)
इकाई - 5	दशम उल्लास – चयनित अलंकार: उपमा, उत्प्रेक्षा, ससन्देह, रूपक, अपहृति, श्लेष, समासोक्ति, निदर्शना, अप्रस्तुतप्रशंसा, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त, दीपक, तुल्ययोगिता, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, व्यजस्तुति, पर्यायोक्त, परिसंख्या, भ्रान्तिमान, संसृष्टि, संकर	विद्यार्थी प्रमुख अलंकारों का ज्ञान प्राप्त करेंगे और उन्हें काव्यरचनाओं में पहचानने व विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

PO–CO Mapping Table

CO Code	संक्षिप्त CO	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
CO1	प्रारंभिक उल्लास और अभिधा की अवधारणा समझना	3	2	2	2	1
CO2	द्वितीय एवं तृतीय उल्लास में अलंकार और काव्यलक्षण का विश्लेषण करना	3	3	2	2	2
CO3	चतुर्थ उल्लास में सौन्दर्य, रस और अलंकार की समझ विकसित करना	2	3	3	2	2
CO4	नवम उल्लास में सूक्ष्म काव्यलक्षण और भावनात्मक प्रभाव का अध्ययन करना	2	3	3	2	2
CO5	चयनित प्रमुख अलंकारों का ज्ञान प्राप्त करना और उन्हें काव्य में विश्लेषण करना	3	3	3	3	3

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय सेमेस्टर			कुल 20 क्रेडिट
विषय आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम			(20 क्रेडिट)
1.	SAN-506	निर्वचन एवं वैदिक भाष्य भूमिका	4
2.	SAN-507	भाषा विज्ञान	4
3.	SAN-508	भारतीय दर्शन- न्याय एवं सांख्य	4
4.	SAN-509	संस्कृत व्याकरण	4
5.	SAN-510	काव्यशास्त्र एवं प्रकरण	4

Paper – I Course Code - SAN-506
Title of Course -निरुक्तऋग्वेदभाष्यभूमिका च

- इकाई-1 निरुक्तम्-प्रथमोऽध्यायः- 1-3 पादाः
इकाई -2 निरुक्तम्-प्रथमोऽध्यायः- 4-6 पादाः
इकाई -3 ऋग्वेदभाष्यभूमिका-आरम्भतः वेदलक्षणपर्यन्तम्-
इकाई – 4 ऋग्वेदभाष्यभूमिका - मन्त्रत्रैविध्यप्रकरणतः वेदाङ्गप्रकरणपर्यन्तम्
इकाई -5 वैदिकभाष्यकाराःप्राचीनम्अर्वाचीनञ्च

सन्दर्भग्रन्थाः -

- यास्कप्रणीतनिरुक्तम्, (निघण्टुसहितम्) (दोभाग), सीतारामशास्त्री, परिमलपब्लिकेशनदिल्ली, तृतीयसंस्करण २००२
- यास्ककृतनिरुक्त, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्भाविद्याभवन, वाराणसी, १९६१
- *The Nighantu and The Nirukta*, Lakshman Sarup, Motilal Banarasidass, Delhi, 1967
- ऋग्वेदभाष्यभूमिका, वीरेन्द्र कुमार वर्मा (व्याख्याकार), चौखम्भापब्लिशर्स, वाराणसी, २०००

Paper II Course Code – SAN-507

Title of Course – भाषा विज्ञान

6

इकाई – एक 12 अंक
भाषा-विज्ञान का सामान्य परिचय- विकास, उपयोगिता एवं उसके विवेच्य विषय (प्रमुख अंग तथा गौण अंग), प्राचीन भारत में भाषा-वैज्ञानिक-कार्य, भाषा की परिभाषा एवं भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त ।

इकाई – दो 12 अंक
ध्वनी-विज्ञान का सामान्य-परिचय, संस्कृत-ध्वनियों का स्वरूप, स्थान एवं प्रयत्न, ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ, ध्वनि-नियम-ग्रिम, ग्रासमान एवं वर्नर ।

इकाई – तीन 12 अंक

अर्थ-विज्ञान का सामान्य-परिचय, अर्थ-परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ, भाषिक-वर्गीकरण- आकृति-मूलक एवं पारिवारिक-वर्गीकरण की सामान्य रूपरेखा ।

इकाई – चार

12 अंक

भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य परिचय तथा विशेषताएँ, शतम एवं केंतुम, शतम एवं केंतुम के आधार पर भारोपीय परिवार का वर्गीकरण, भारत-ईरानी परिवार का सामान्य परिचय ।

इकाई – पाँच

12 अंक

संस्कृत का क्रमिक विकास – प्राचीन भारतीय (वैदिक एवं लौकिक आर्य-भाषा, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश) का सामान्य-परिचय ।

Paper III Course Code – SANS-508

Title of Course – भारतीयदर्शनम्-सांख्यन्यायौ

Course Contents:

तर्कभाषा- अनुमानप्रमाणादारभ्य प्रमाणनिरूपणपर्यन्तम्

Unit I- अनुमानप्रमाणम्, हेत्वाभासः

12 अंकाः

Unit II- उपमानम्, शब्दप्रमाणनिरूपणम्, अन्यप्रमाणानां खण्डनं च

12 अंकाः

सांख्यतत्त्वकौमुदी-

Unit III- कारिका संख्या 1 तः 10 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Unit IV- कारिका संख्या 11 तः 20 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Unit V- कारिका संख्या 21 तः 30 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Recommended Readings:

- तर्कभाषा. आचार्य बदरीनाथ शुक्ल. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1979.
- तर्कभाषा. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2017.
- तर्कभाषा. श्रीनिवास शास्त्री. मेरठ: साहित्य भण्डार, 1972.
- सांख्यदर्शनम्. प्रो. रामनाथ झा. दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन.
- सांख्यकारिका. आचार्य निगम शर्मा. नई दिल्ली: परिमल प्रकाशन, 2007.
- सांख्यकारिका-ईश्वरकृष्ण. राकेश शास्त्री. दिल्ली: संस्कृत ग्रन्थागार, 2004.
- सांख्यकारिका. डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय. वाराणसी: चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, 2013.
- सांख्यतत्त्वकौमुदी-प्रभा. प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र, इलाहाबाद: अक्षयवट प्रकाशन.
- सांख्यतत्त्वकौमुदी. डॉ. गजाननशास्त्रीमुसलगाँवकर. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1992.
- सांख्यतत्त्वकौमुदी. रामशंकर भट्टाचार्य. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

- Jha, Ganganath (ed.) Samkhyatattva-Kaumudi of Vachaspati Misra
(Sanskrit Text with English Translation). Bhartiya Book Corporation, 2021.

Paper IV Course Code – SAN-509

Title of Course – संस्कृत व्याकरण

लघुसिद्धान्त कौमुदी के निम्नांकित प्रकरण

इकाई – एक – पूर्व कृदन्त	12 अंक
इकाई – दो – उत्तर कृदन्त	12 अंक
इकाई – तीन – तद्धित प्रत्यय – शैषिक प्रकरण पर्यन्त	12 अंक
इकाई – चार – महाभाष्य पस्पशाह्निक प्रयोजन निरूपण पर्यन्त	12 अंक
इकाई – पाँच – महाभाष्य – पस्पशाह्निक का शेष भाग	12 अंक

Paper V Course Code- SAN-510

Title of Course – काव्यशास्त्र एवं प्रकरण

ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत (लोचन टीका सहित)

इकाई – एक – कारिका 1 से 8 तक	12 अंक
इकाई – दो – कारिका 9 से 13 तक	12 अंक
इकाई – तीन – कारिका 14 से समाप्ति पर्यन्त	12 अंक

मृच्छकटिकम्

इकाई – चार – मृच्छकटिकम् अङ्क 1 से 4 तक	12 अंक
इकाई – पाँच – मृच्छकटिकम् अङ्क 5 से 10 तक	12 अंक

द्वितीय सेमेस्टर) पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –Course Outcomes)

पाठ्यक्रम कोड	शीर्षक	Course Outcomes (COs)	Bloom's स्तर
SAN-506	निर्वचन एवं वैदिक भाष्य भूमिका	CO1: वैदिक भाष्य की भूमिका समझना। CO2: निर्वचन की पद्धति का अध्ययन। CO3: वैदिक व्याख्यान विधि को व्यवहार में लाना।	Understand, Apply, Evaluate
SAN-507	भाषा विज्ञान	CO1: भाषा के स्वरूप और विकास का विवेचन। CO2: संस्कृत और अन्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन। CO3: भाषाविज्ञान के सिद्धान्तों का अनुप्रयोग।	Understand, Analyze
SAN-508	भारतीय दर्शन न्याय एवं – सांख्य	CO1: न्याय और सांख्य दर्शन के तत्त्वों का ज्ञान। CO2: तर्कशास्त्रीय दृष्टि विकसित करना।	Understand, Evaluate

पाठ्यक्रम कोड	शीर्षक	Course Outcomes (COs)	Bloom's स्तर
		CO3: सांख्य के सृष्टिवाद की समीक्षा।	
SAN-509	संस्कृत व्याकरण	CO1: पाणिनीय परंपरा में प्रयोग। CO2: रूपनिर्माण की विधियाँ। CO3: व्याकरणिक विश्लेषण कौशल विकसित करना।	Remember, Apply
SAN-510	काव्यशास्त्र एवं प्रकरण	CO1: काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की गहराई में अध्ययन। CO2: प्रकरणों का विश्लेषण। CO3: आलोचना में उनका प्रयोग।	Understand, Evaluate

PO-CO Mapping Table (द्वितीय सेमेस्टर)

पाठ्यक्रम कोड	COs	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6
SAN-506	CO1-3	3	3	2	2	2	3
SAN-507	CO1-3	3	3	3	2	3	3
SAN-508	CO1-3	2	3	3	2	3	3
SAN-509	CO1-3	3	3	2	3	2	2
SAN-510	CO1-3	2	3	3	2	3	3

तृतीय सेमेस्टर

तृतीय सेमेस्टर			कुल 20 क्रेडिट
विषय आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम			(20 क्रेडिट)
सभी वर्ग हेतु अनिवार्य			
1.	SAN-511	अनुवाद एवं मीमांसा शास्त्र	4
2.	SAN-512	शिलालेख भारतीय संस्कृति तथादर्शन	4
वेद वर्ग चयनित पाठ्यक्रम (Group-A)			
3.	SAN-551	ऋग्वेद तृतीय मंडल के कुछ प्रमुख सूक्त	4
4.	SAN-552	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यन्दिन संहिता वाजसनेयी)	4

		प्रातिशाख्य)	
5.	SAN-553	प्रातिशाख्य	4
साहित्य वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-B)			
6.	SAN-554	काव्यशास्त्र	4
7.	SAN-555	नाट्यशास्त्र	4
8.	SAN-556	महाकाव्य	4
दर्शन वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-C)			
9.	SAN-557	न्याय दर्शन	4
10.	SAN-558	योगदर्शन	4
11.	SAN-559	सांख्य दर्शन	4
व्याकरण वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-D)			
12.	SAN-560	वाक्यपदीय एवं पाणिनीय शिक्षा	4
13.	SAN-561	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	4
14.	SAN-562	परमलघुमञ्जूषा एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कृदन्त प्रकरण)	4

Semester -III Group- (A) Veda

Course Code - SAN - 551

प्रथमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यशीर्षकम्-वैदिकसूक्तानि

Unit – I ज्ञानम् (10.71), पर्जन्यः (5.83)

Unit –II संवादसूक्तानि - सरमा-पणिः (ऋ.वे.,10.108,), विश्वामित्र-नदी (ऋ.वे.,3.33)

संवादसूक्तानि - पुरुरवा-उर्वशी (ऋ.वे.,10.95), यम-यमी (ऋ.वे.,10.10)

Unit- III कालं (अ.वे.,10.53), राष्ट्राभिवर्धनं (अ.वे.,1.29) सांमनस्यम् (अ.वे., 31)

Unit –IV अवेस्ताहओमयस्त-यस्त 9, 1-32

Unit-IV वैदिकस्वराङ्कनपदपाठश्च

सन्दर्भग्रन्थाः -

- न्यूवैदिकसलेक्शन(भाग-१-२), के. एन. एस. तैलंगतथाचौबे, भारतीयविद्याभवन, वाराणसी, १९८०
- अवेस्ता, राजाराम, श्रीमद्दयानन्दऐंग्लोवैदिककॉलेज, लाहौर।
- वेदामृतमञ्जूषिका, प्रयागनारायणमिश्र, प्रकाशन केन्द्र , लखनऊ , वर्ष २००४
- ऋक्सूक्तसंग्रहः, हरिदत्तशास्त्री (व्याख्याकार), साहित्य भण्डार, मेरठ।

Paper - II

Course Code SAN - 552

Title of Course –शुक्लयजुर्वेदःवाजसनेयिप्रातिशाख्यञ्च

इकाई – 1 शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनसंहिता)प्रथमोऽध्यायः(1-20मन्त्राः)

इकाई – 2 शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनसंहिता)प्रथमोऽध्यायः(21-31मन्त्राः)

तथातेइसवांअध्याय- (1-10 मन्त्राः)

इकाई – 3 वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्-प्रथमोऽध्यायः

इकाई – 4 वाजसनेयिप्रातिशाख्यम् -द्वितीयोऽध्यायः

इकाई – 5 समीक्षात्मकाःप्रश्नाः

सन्दर्भग्रन्थाः -

- शुक्लयजुर्वेदश्रीमदुवटाचार्यकृतवेददीपभाष्येण च समन्विता, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, २००७
- वाजसनेयि-माध्यन्दिन-शुक्लयजुर्वेदसंहिता, जगदीशलालशास्त्री, (सम्पादक) मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, २००७
- वाजसनेयि-प्रातिशाख्यम्शौनकविरचित, (उव्वटभाष्य-संवलितम्), वीरेन्द्रकुमारवर्मा (व्याख्याकार), चौखम्भासंस्कृतप्रतिष्ठान, दिल्ली, २०१०

Paper- III

Course Code - SAN- 553

Title of Course – शिक्षाप्रातिशाख्यञ्च

इकाई -1 शिक्षाप्रातिशाख्यञ्चसमीक्षात्मकअध्ययनम्

इकाई – 2 ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्- प्रथमपटलम्

इकाई – 3 ऋग्वेदप्रातिशाख्य-द्वितीयपटलम्

इकाई – 4 याज्ञवल्क्यशिक्षा-स्वरवर्णप्रकरणम्

इकाई – 5 याज्ञवल्क्यशिक्षा-वर्णोच्चारणविधिः

सन्दर्भग्रन्थाः -

- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्शौनकविरचित, (उव्वटभाष्य-संवलितम्), वीरेन्द्रकुमारवर्मा, चौखम्भासंस्कृतप्रतिष्ठान, दिल्ली
- शिक्षासङ्ग्रहःमहर्षियाज्ञवल्क्यादिविरचितः, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९८९
- याज्ञवल्क्यशिक्षा, नरेशझा (व्याख्याकार), चौखम्भासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी,

Elective Course (Group – B – Literature)

Paper I

Course Code: SAN-554

Title of Course – काव्यशास्त्रम्

Course Contents-

काव्यप्रकाशः

Unit:1 – पञ्चमोल्लासः

Unit:2 – षष्ठोल्लासः

Unit:3 – सप्तमोल्लासः

Unit:4 – अष्टमोल्लासः

वक्रोक्तिजीवितम्

Unit:5 – वक्रोक्तिजीवितम् प्रथ –मोन्मेषः

Recommended Readings-

- काव्यप्रकाशः, प्रदीपोद्योत टीका संवलित आनन्दाश्रम मुद्रणालय, त्रिवेन्द्रम् संस्करण -1929
- Kavyaprakasha of Mammta with English Translation, Mahamahopadhyaya Dr. Sir Ganganatha Jha, Bhargava Bhushan Press, Gai Ghat, Varanasi, 1985
- काव्यप्रकाशः, आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल वाराणसी, संस्करण 2011
- काव्यप्रकाशः, श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1995
- काव्यप्रकाशः, बालबोधिनी-टीका, भट्टवामनाचार्य (झलकीकर), परिमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2019
- काव्यप्रकाशः, पंमधुसूदन शा .स्त्री, ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक सेलर वाराणसी, संवत् 2029
- काव्यप्रकाशः, डॉ० पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, संस्करण - 1986
- वक्रोक्तिजीवितम्, आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि , हिन्दी अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 1985
- वक्रोक्तिजीवितम्, डॉ. दशरथ द्विवेदी, विश्वविद्यालयप्रकाशन, वाराणसी, 1998
- वक्रोक्तिजीवितम्, श्री परमेश्वर दीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 2012
- वक्रोक्तिजीवितम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1995

Paper II

Course Code: SAN-555

Title of Course – नाट्यशास्त्रम्

Course Contents-

Unit- 1 – नाट्यशास्त्रीय-परम्परायाः सामान्यपरिचयः

दशरूपकम्

Unit:2 – प्रथमप्रकाशः

Unit:3 – द्वितीयप्रकाशः

Unit:4 – तृतीयप्रकाशः

Unit:5 – चतुर्थप्रकाश : अवलोकटीकासहितः

Recommended Readings-

- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (अष्टम-खण्ड काव्यशास्त्र), बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2001
- दशरूपकम्, श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ, संस्करण- 2007
- दशरूपकम्, बैजनाथ पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदासवाराणसी, संस्करण 2015
- दशरूपकम्, डॉरमाश.ङ्कर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदासवाराणसी, संस्करण -2005
- दशरूपकम्, केशवराव मूसलगाँवकर, चौखम्बा विद्याभवनवाराणसी, संस्करण 2010

- दशरूपकम्, डॉ० भोलाशङ्कर व्यास, चौखम्बा प्रकाशनवाराणसी, संस्करण 1995

Paper III

Course Code: SAN-556

Title of Course –नाटकं नाटिका च

Course Contents-

Unit:1 –नाटकनाटिकयोःविशेषपरिचयः

मुद्राराक्षसम्

Unit:2 –मुद्राराक्षसम् -प्रारम्भतः चतुर्थाङ्कपर्यन्तम्

Unit:3 – मुद्राराक्षसम् – पञ्चमाङ्कतः समाप्तिपर्यन्तम्

रत्नावली

Unit:4–रत्नावली-प्रथमद्वितीयौ अङ्कौ

Unit:5 – रत्नावली-तृतीयचतुर्थौ अङ्कौ

Recommended Readings-

- संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 1987
- Mudrārākshasa, Kāshināth Trimbak Telang, Nirnay Sagar Press, Bombay, 1915
- Mudrārākshasa, M R Kāle, Śāradākṛīdan Press, Bombay, 1900
- मुद्राराक्षस, भारतेन्दु हरिचन्द्र, राम नारायण लाल, इलाहाबाद, सम्वत् 2006
- मुद्राराक्षसम्, पर्मेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा, वाराणसी, 2012
- मुद्राराक्षस, रांगेय राघव, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 2014
- रत्नावली, श्रीरामचन्द्र मिश्र, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1995
- रत्नावली, डॉ. गंगासहाय प्रेमी, साहित्य सरोवर प्रकाशन- 2021
- रत्नावली, डॉ० मुरारी लाल अग्रवाल, हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा
- रत्नावली, डॉ. बालगोविन्द झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2000
- रत्नावली, तारिणीश झा, रामनारायण लाल विजयकुमार कटरा, इलाहाबाद, 1996

lective Course (Group D - Philosophy)

Paper I

Course Code - SANS-557

Title of Course - न्यायदर्शनम्

Course Contents:

न्यायसूत्रं वात्स्यायनभाष्यसहितम् प्रथमोऽध्यायः

Unit I-प्रथमाह्निकं सूत्रसंख्या 1 तः 9 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Unit II-प्रथमाह्निकं सूत्रसंख्या 10 तः 30 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Unit III- प्रथमाह्निकं सूत्रसंख्या 31 तः 41 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Unit IV-द्वितीयाह्निकं सूत्रसंख्या 1 तः 9 पर्यन्तम्

12 अंकाः

Recommended Readings:

- न्यायसूत्र वात्स्यायन भाष्य. सं. स्वामी द्वारिकादास शास्त्री. वाराणसी: बौद्ध भारती.
- न्यायदर्शन (वात्स्यायन-भाष्य सहित). आचार्य दुण्डिराज शास्त्री (व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस.
- Gautama's Nyayasutras (with Vatsyayana-Bhasya). Ganganath Jha (trans.). Poona: Oriental Book Agency, 1939.
- Chatterjee, S.C. *Nyāya theory of knowledge: A critical study of some problems of logic and metaphysics*. Calcutta, 2017.
- Nyayasutras of Gotama. S. C. Vidyabhushan. Delhi: Munshiram Manoharlal, Delhi
- Nyaya Bhashya, Swami Dwarikadas Sastri (ed.). Varanasi: Baudha Bharati, Varanasi, 1998.
- Nyayadarsanam, Dr.T Aryadevi, Kanippayyur Sankaran Nampoothirippad Smaraka Grandhasala, Kanippayyur 2014.
- Nyāya-sūtra with Bhāṣya of Vātsyāyana, Poona, Oriental Book Agency. Text and Translation: Nyāya-sūtra of Gautama (Original in Sanskrit) Anumāna-khaṇḍa with translation by Ganganatha Jha, 1939.

Elective Course (Group D - Philosophy)

Paper II

Course Code - SANS-558

Title of Course - योगदर्शनम्

Course Contents:

योगसूत्रं व्यासभाष्यसहितम्

Unit I-समाधिपादस्य सूत्रसंख्या 1 तः 16 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit II-समाधिपादस्य सूत्रसंख्या 17 तः 29 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit III- समाधिपादस्य सूत्रसंख्या 30 तः 40 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit IV- समाधिपादस्य सूत्रसंख्या 41 तः 51 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit V- साधनपादस्य सूत्रसंख्या 1 तः 11 पर्यन्तम्	12 अंकाः

Recommended Readings:

- पातञ्जलयोगदर्शनम् - पतञ्जलि, (व्याख्याकार) सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1993
- पातञ्जलयोगदर्शनम् - पतञ्जलि, (व्याख्याकार) स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974

- Yogasūtram- Patanjali. J.R. Ballantyne (ed.). Delhi: Pious Book Corp., 1985
- Prabhavananda, Swami and Isherwood, Christopher. The yoga aphorisms of Patañjali (Chapter-IV). Madras: Sri Ramakrishna Math, 1953.
- Verma, G.L. (2009). Pātañjala yoga sūtras. New Delhi: Chowkambha Sanskrit Series.
- Deussen, Paul. *Philosophy of Upanishads*. Calcutta: Education Enterprise, 1972.

Elective Course (Group D - Philosophy)

Paper III

Course Code - SANS-559

Title of Course – शाङ्करदर्शनम्

Course Contents:

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्

Unit I-अध्यासभाष्यम्, सूत्रसंख्या 1.1.1 तः सूत्रसंख्या 1.1.2 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit II-सूत्रसंख्या 1.1.3 तः 1.1.4 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit III- सूत्रसंख्या 1.1.5 तः 1.1.11 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit IV- पञ्चदशीप्रकरणसंख्या 1 तः 2 पर्यन्तम्	12 अंकाः
Unit V- पञ्चदशीप्रकरणसंख्या 3 तः 5 पर्यन्तम्	12 अंकाः

Recommended Readings:

- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. स्वामी हनुमान् जी षड्भास्त्री(व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, 1964.
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. सत्यानन्दसरस्वती(व्याख्याकार). सत्यानन्दीदीपिकासहित. वाराणसी: गोविन्दमठ, 1978.
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. कामेश्वरमिश्र(व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, 1976.
- पञ्चदशी. डॉ. देवस्वरूप मिश्र. वाराणसी: चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन.
- Deutsch, E. Advaita Vedānta. Hawaii: University of Hawaii Press, 1969.
- Alston, A.J. *Śaṅkara on the Absolute*. Shanti Sadan, 1981.
- Brahmasutram Chatussutri, Sankarabhasyopetam, Motilal Banarsidas Publishers Pvt. Ltd., Delhi.
- Devaraja, N.K. *Introduction to Śaṅkara's Theory of Knowledge*. Delhi: M.L.B.D, 1972.
- Gambhirananda, Swami (Trans.). *Brahma Sūtra Bhāṣya of Śaṅkarācārya*. Calcutta: Advaita Ashrama, 1993.
- Swami Sivananda. *Brahmasutra*. Delhi: Motilal Banarsidas, 1977.

- Sharma, H.D. *ŚrīŚāṃkara-BhāṣyasahitāBrahmasūtraCatuḥsūtrī*. Oriental Series no. 70. Pune: Poona Oriental Book Agency, 1940.
- Pandit P. Gopalan Nair, Brahmasutram. Trissur: The Ethos, 1994.
- Prof. G. Balakrishnan Nair – Brahmasutrabhashyam. Trivandrum: Kerala Bhasha Institute.
- The work of Sri Sankaracharya, Sri Vadivilas Press Srirangam.

Paper IV

Course Code - SANS-511

Title of Course-अनुवाद: व्याकरणम् मीमांसाशास्त्रम् च

समेषां छात्राणां कृते अनिवार्यम्

Course Contents:

Unit I-हिन्दीभाषया संस्कृते अनुवादः, संस्कृतभाषायां निबन्धः	12 अंकाः
Unit II-पाणिनीयशिक्षा-हिन्दीव्याख्या आलोचनात्मकप्रश्नानाः च	12 अंकाः
Unit III-स्त्री-प्रत्ययः (लघुसिद्धान्तकौमुदी) साधनिका सूत्राणां व्याख्या च	12 अंकाः
Unit IV-अर्थसङ्ग्रहः -भावना विधेः निरूपणम् च	12 अंकाः
Unit V-अर्थसङ्ग्रहः -मन्त्रनिषेधार्थवादनामधेयानां निरूपणम्	12 अंकाः

Recommended Readings:

- मीमांसक, डॉ. युधिष्ठिर. व्याकरणशास्त्र का इतिहास. हरियाणा: बहालगढ़, रामलाल कपूर ट्रस्ट.
- शास्त्री, महादेव. *पूर्वमीमांसादर्शनम्*. मैसूर: गवर्नमेन्ट ब्राञ्च प्रेस.
- शर्मा, डॉ. उमाशंकर. मीमांसादर्शनम्. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.
- लघुसिद्धान्त कौमुदी. श्री महेश सिंह कुशवाहा. दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली.
- लघुसिद्धान्त कौमुदी. श्री धरानन्द शास्त्री. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- पाणिनीय शिक्षा ('अर्चना' व्याख्यासंवलित). डॉ. रमाशंकर मिश्र. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.
- काणे, पी.वी. *धर्मशास्त्र का इतिहास*. लखनऊ: उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान.
- अर्थसंग्रह. दया शंकर शास्त्री. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन.
- अर्थसंग्रह. डॉ. कामेश्वरनाथ मिश्र. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.
- अर्थसंग्रह. डॉ. सत्यप्रकाश शर्मा. मेरठ: साहित्य भण्डार.
- The Purva-Mimansa Sutra (Original Text, English Translation & Commentary). Pandit Ganganatha Jha. Parimal Publication Pvt. Ltd., 2018.

Paper V

Course Code - SANS-512

Title of Course-वैदिकधर्मः, भारतीयदर्शनम्, संस्कृतिः अभिलेखः च

Course Contents:

Unit I- वैदिकधर्मस्य स्वरूपम् महत्त्वं तस्य विविध-आयामः च	12 अंकाः
Unit II- भारतीयदर्शनस्य वैशिष्ट्यं तथा उपनिषत्सु दार्शनिकप्रवृत्तयः	12 अंकाः
Unit III- बौद्ध जैन-चार्वाक दर्शनानां सामान्यपरिचयः प्रमुखसम्प्रदायाः तेषां सिद्धान्ताः च	12 अंकाः
Unit IV- प्राचीनभारतीयसंस्कृतिः -शिक्षा, कला, राज्यस्य स्वरूपम्, स्त्रीणां दशा, धार्मिक-आन्दोलनम्	12 अंकाः
Unit V- अधोलिखितेषु अभिलेखेषु आधारिताः प्रश्नाः	12 अंकाः
(i) समुद्रगुप्तस्य प्रयाग प्रशस्तिस्तम्भलेखः (ii) नृपचन्द्रस्य मेहरौलीस्तम्भलेखः (iii) कुमारगुप्तस्य मन्दसौर-अभिलेखः (iv) स्कन्दगुप्तस्य जूनागढ़-अभिलेखः (v) पुलकेशिनद्वितीयस्य ऐहोलप्रशस्तिः	

Recommended Readings:

- उपाध्याय, बलदेव. *वैदिक साहित्य और संस्कृति*. वाराणसी: शारदा मन्दिरप्रकाशन.
- माधवाचार्य. *सर्वदर्शनसंग्रह*. उमाशंकर शर्मा. वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन, 2020.
- गुप्ता, परमेश्वरीलाल. *प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (Part-1)*, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014.
- गुप्ता, परमेश्वरीलाल. *प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (Part-2)* (8वाँ संस्करण). वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2022.
- राय एस. एन. *पुरालिपि एवं अभिलेख*. प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन.
- शर्मा, चन्द्रधर. *भारतीय दर्शन: आलोचना और अनुशीलन*. मोतिलाल बनारसीदास.
- उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन*. वाराणसी: शारदा मन्दिर, 2001.
- झा, आचार्य आनन्द. *चार्वाक दर्शन*. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान.
- जैन, डॉ. महेन्द्रकुमार. काशी: श्री गणेशप्रसाद वर्णीजैन ग्रन्थमाला.
- मिश्र, सच्चिदानन्द. *नवचार्वाककारिकावली* (अभिनवबार्हस्पत्यदर्शनम्).
- अग्रवाल, वासुदेव शरण. *भारतीय कला*. वाराणसी: पृथ्वी प्रकाशन.
- सुनिया, वी. एन. *प्राचीन भारतीय संस्कृति*. आगरा: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन.
- उपाध्याय, रामजी. *भारतस्य सांस्कृतिकनिधिः*. दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान.
- राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. *भारतीय संस्कृतिः कुछ विचार*. दिल्ली: राजपाल प्रकाशन.
- कौशाम्बी, डी.डी. *प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- Hiriyanna, M. *Outline of Indian Philosophy*. London, 1956.
- Kumar, Shashi Prabha. *Relevance of Indian Philosophy in modern context*. Nag Publisher, 1993.
- S. Radhakrishnan. *Indian Philosophy*. Oxford University Press, 1990.

विशेषज्ञता – व्याकरणम्

Paper -I

Course Code – SAN-560

**Title of Course – वैयाकरणभूषणसारः वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी
(कारकसमासप्रकरणे)**

पाठ्यचर्या विवरण :

यह पाठ्यचर्या वैयाकरण भूषणसार एवं सिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ पर आधारित है । पाठ्यचर्या धात्वर्थनिर्णय एवं शाब्दबोध की प्रक्रिया को अवगत कराने में तथा संस्कृत व्याकरण की कारकीय व सामासिक प्रक्रिया का उच्च ज्ञान कराने में सक्षम है ।

इकाई – १ – वैयाकरणभूषणसारस्य स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च,

वैयाकरणभूषणसारः - धात्वर्थनिर्णयः (१- ६ कारिका) १२ अङ्काः

इकाई -२ - वैयाकरणभूषणसारः - धात्वर्थ निर्णयः (७- २१ कारिका) १२ अङ्काः

इकाई -३ – वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- कारकप्रकरणम् (प्रथमातः पञ्चमीविभक्तिपर्यन्तम्) १२ अङ्काः

इकाई -४ - वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – कारकप्रकरणम् (षष्ठीसप्तम्यौ विभक्ती), अव्ययीभावसमासः (समासान्तान् वर्जयित्वा) १२ अङ्काः

इकाई -५ - वैया.सिद्धान्तकौमुदी – समासप्रकरणम् (तत्पुरुषबहुव्रीहिद्वन्द्व-समासानां प्रमुखानि सूत्राणि (समासान्तान् वर्जयित्वा) १२ अङ्काः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. वैयाकरणभूषणसार (भैमीभाष्योपेता), भीमसेन शास्त्री, वैद्यो भीमसेन शास्त्री, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1969
2. वैयाकरणभूषणसार, श्री. पं. गोपालशास्त्री नेने, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221001, पञ्चम संस्करण, 1981
3. वैयाकरणभूषणसार, डॉ. प्रभाकर मिश्र, प्र. अरविन्द मिश्र तथा मकरन्द मिश्र, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1982
4. वैयाकरणभूषणसार, पं. बालकृष्ण पञ्चोली तथा पं. हरिवल्लभशास्त्री, प्र. तर्केश्वर चतुर्वेदी शास्त्री, 1917
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, डॉ. रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 1996
6. वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी, भट्टोजिदीक्षित, चौखम्बा भारतीय प्रकाशन ,वाराणसी, 1990
7. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी म. म. पं. गिरधरशर्मा चतुर्वेदी तथा म. म. पं. परमेश्वरानन्दशर्माभास्कर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली - 110007, पुनर्मुद्रण 1989
8. Vasu, S.C. Siddhantakaumudi (2 Vols.), Text and English Translation, 2021 , Parimal publication, delhi

Title of Course - वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – तिङन्तप्रकरणम्

पाठ्यचर्या विवरण :

इकाई – १ – प्रकरणग्रन्थानां प्रक्रियाग्रन्थानाञ्च परिचयः,
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च १२ अङ्काः

इकाई – २- भ्वादिगणः - (भू-एध्-पठ्धातवः)
(गम्-टश्-स्था-वद्-नीधातवः अभ्यासार्थम्) १२ अङ्काः

इकाई -३ - अदादिगणः - (अद्-अस्थातू), जुहोत्यादिगणः - (हू-भी-धातू)
दिवादिगणः -(दिक्-जनी-नृत्धातवः) १२ अङ्काः

इकाई -४ - स्वादिगणः -(सु-चिञ्धातू),तुदादिगणः -(तुद्-लिञ्धातू),
रुधादिगणः-(रुध्-भुञ्धातू) १२ अङ्काः

इकाई -५ - तनादिगणः-(तन्-कृञ्धातू),क्र्यादिगणः-(क्री-ज्ञाधातू),चुरादिगणः -
(चूर्-कथ्धातू) १२ अङ्काः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. गोविन्दाचार्य ,वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2010
2. जिज्ञासु, पं - ब्रह्मदत्त .अष्टाध्यायी प्रथमा (भाष्य)वृत्ति, रामलालकपूरट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत,हरियाणा
3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, डॉ. रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 1996
4. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी, भट्टोजिदीक्षित, चौखम्बा भारतीय प्रकाशन , वाराणसी , 1990
5. Vasu, S.C. Siddhantakaumudi (2 Vols.), Text and English Translation, 2021 ,
Parimal publication, delhi

Paper - III

Course Code – SAN-562

Title of Course – परमलघुमञ्जूषा, वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी
(कृदन्तप्रकरणम्)

पाठ्यचर्या विवरण :

इकाई – १ – परमलघुमञ्जूषायाः स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च,
स्फोटशक्त्योः स्वरूपं, शक्ति-नियामक-विचाराः १२ अङ्काः

इकाई -२ - परमलघुमञ्जूषा- लक्षणाविचारः, व्यंजनाविचारः,
शाब्दबोध-सहकारिकारण-विचारः १२ अङ्काः

इकाई -३ - वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – कृत्य प्रकरणम् १२ अङ्काः

इकाई -४ - वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – पूर्वकृदन्त प्रकरणम् १२ अङ्काः

इकाई -५ - वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – उत्तरकृदन्त प्रकरणम् १२ अङ्काः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. परमलघुमञ्जूषा, डॉ. जयशङ्करलाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1985
2. परमलघुमञ्जूषा, पं. श्रीसदाशिवशास्त्री, जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, बनारस सिटी, द्वितीय संस्करण, 1946
3. परमलघुमञ्जूषा, पं. कालिकाप्रसाद शुक्ल, बडौदा संस्कृत महाविद्यालय, महाराजसयाजिरावविश्वविद्यालय, बडौदा, प्रथम संस्करण, 1961
4. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, डॉ. रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 1996
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (चतुर्थ भाग), म. म. पं. गिरधरशर्मा चतुर्वेदी तथा म. म. पं. परमेश्वरानन्दशर्माभास्कर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 1989
6. . Vasu, S.C. Siddhantakaumudi (2 Vols.), Text and English Translation, 2021 , Parimal publication, delhi.

तृतीय सेमेस्टर (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम कोड	शीर्षक	Course Outcomes (COs)	Bloom's स्तर
SAN-501	ऋग्वैदिक सूक्त	CO1: ऋग्वेद के सूक्तों की भाषा व अर्थ को समझ सके। CO2: वैदिक संस्कृत के मूल भावों का विवेचन करे। CO3: वैदिक संस्कृत की व्याकरणिक विशेषताएँ पहचान सके।	Understand, Analyze, Apply
SAN-502	पालिप्राकृत एवं – अपभ्रंश	CO1: इन भाषाओं के विकासक्रम को व्याख्यायित करे। CO2: संस्कृत और प्राकृत की तुलना कर सके। CO3: अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को समझ सके।	Understand, Analyze

पाठ्यक्रम कोड	शीर्षक	Course Outcomes (COs)	Bloom's स्तर
SAN-503	भारतीय दर्शन – न्याय एवं वेदान्त	CO1: न्याय एवं वेदान्त के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करे। CO2: दोनों दर्शनों की तुलनात्मक समीक्षा कर सके। CO3: भारतीय दर्शन के तार्किक पक्ष को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जोड़े।	Understand, Analyze, Evaluate
SAN-504	संस्कृत व्याकरण	CO1: पाणिनीय व्याकरण के सूत्रों की संरचना को जाने। CO2: संधि, समास, तद्धित, कृदन्त इत्यादि रूपों का प्रयोग कर सके। CO3: व्याकरण को भाषिक विश्लेषण के औजार की तरह उपयोग करे।	Remember, Apply, Analyze
SAN-505	संस्कृत काव्यशास्त्र	CO1: रस, ध्वनि, वक्रोक्ति इत्यादि सिद्धान्तों को समझे। CO2: काव्य में सौन्दर्यतत्त्व की पहचान कर सके। CO3: काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का आधुनिक आलोचना से संबंध जोड़े।	Understand, Evaluate, Create

M.A. Sanskrit – तृतीय सेमेस्टर एकीकृत CO-PO Mapping Chart)

पाठ्यक्रम कोड	शीर्षक	Course Outcomes (COs)	Bloom's स्तर
SAN-511	अनुवाद एवं मीमांसा शास्त्र	CO1: मीमांसा के सिद्धान्त समझना। CO2: अनुवाद में प्रयोग करना। CO3: मीमांसा का मूल्यांकन करना।	PO1-3, PO2-2, PO3-2
SAN-512	शिलालेख, भारतीय संस्कृति व दर्शन	CO1: शिलालेखीय साक्ष्य जानना। CO2: संस्कृति का विश्लेषण। CO3: दार्शनिक प्रभाव समझना।	PO1-3, PO2-2, PO4-2
SAN-551	ऋग्वेद तृतीय मंडल के सूक्त	CO1: सूक्तों का अर्थ जानना। CO2: वैदिक चिन्तन समझना। CO3: वैदिक परम्परा का मूल्यांकन।	PO1-3, PO2-2, PO5-2
SAN-552	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन) (संहिता	CO1: वैदिक मन्त्रों का अध्ययन। CO2: भाषाशास्त्र समझना। CO3: वैदिक परम्परा विश्लेषण।	PO1-3, PO2-2, PO3-2
SAN-553	प्रातिशाख्य	CO1: उच्चारण नियम स्मरण। CO2: ध्वनि सिद्धान्त प्रयोग। CO3: परम्परा का मूल्यांकन।	PO1-3, PO2-2, PO4-2
SAN-554	काव्यशास्त्र	CO1: रसअलंकार सिद्धान्त जानना।-	PO1-3, PO2-2,

		CO2: काव्य विश्लेषण । CO3: परम्परा मूल्यांकन ।	PO3-2
SAN-555	नाट्यशास्त्र	CO1: नाट्य सिद्धान्त समझना । CO2: नाट्य परम्परा विश्लेषण । CO3: आधुनिक सन्दर्भ मूल्यांकन ।	PO1-3, PO2-2, PO4-3
SAN-556	महाकाव्य	CO1: महाकाव्य पहचानना । CO2: पात्र व शैली विश्लेषण । CO3: सांस्कृतिक योगदान समझना ।	PO1-3, PO2-2, PO3-3
SAN-557	न्याय दर्शन	CO1: तर्क सिद्धान्त जानना । CO2: तुलनात्मक दर्शन विश्लेषण । CO3: तर्क परम्परा मूल्यांकन ।	PO1-3, PO2-2, PO4-2
SAN-558	योग दर्शन	CO1: योग सूत्र स्मरण । CO2: योगसाधना लागू करना । CO3: दर्शन मूल्यांकन ।	PO1-3, PO3-3, PO5-2
SAN-559	सांख्य दर्शन	CO1: प्रकृतिपुरुष सिद्धान्त ।- CO2: विज्ञान से संबंध । CO3: विश्लेषण व मूल्यांकन ।	PO1-3, PO2-2, PO4-2
SAN-560	वाक्यपदीय एवं पाणिनीय शिक्षा	CO1: व्याकरण सिद्धान्त जानना । CO2: प्रयोग विश्लेषण । CO3: व्याकरणदर्शन जोड़ना ।-	PO1-3, PO3-2, PO4-2
SAN-561	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	CO1: सूत्रार्थ स्मरण । CO2: प्रयोग अभ्यास । CO3: व्याकरणिक परम्परा मूल्यांकन ।	PO1-3, PO2-2, PO3-2
SAN-562	परमलघुमञ्जूषा एवं कृदन्तप्रकरण	CO1: कृदन्त सिद्धान्त स्मरण । CO2: शब्दनिर्माण लागू करना । CO3: व्याकरणिक उपयोग मूल्यांकन ।	PO1-3, PO2-2, PO4-2

चतुर्थ सेमेस्टर			कुल 20 क्रेडिट
विषय आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम			(20 क्रेडिट)
सभी वर्ग हेतु अनिवार्य			
1.	SAN-613	निबन्ध वाक्यपदीय एवं न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	4
2.	SAN-614	कवि एवं काव्यशास्त्र तथा शांकरोत्तर वेदान्त	4
वेद वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-A)			
3.	SAN-660	स्वर वैदिकी	4
4.	SAN-661	शतपथ ब्राह्मण	4
5.	SAN-662	अवेस्ता प्राचीन फारसी शिलालेख तथा निरुक्त	4
साहित्य वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-B)			
6.	SAN-663	उपन्यास एवं पद्य रचना	4
7.	SAN-664	रसगंगाधर एवं रत्नावली	4
8.	SAN-665	चम्पू एवं गद्यकाव्य	4
दर्शन वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-C)			
9.	SAN-666	न्याय-वैशेषिक दर्शन	4
10.	SAN-667	प्राक्षांकरवेदान्त एवं योगदर्शन	4
11.	SAN-668	शांकरवेदान्त	4
व्याकरण वर्ग चयनित पाठ्यक्रम(Group-D)			
12.	SAN-669	वैयाकरणभूषणसार एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	4
13.	SAN-670	प्राच्य एवं नव्य व्याकरण	4
14.	SAN-671	काशिकावृत्ति एवं व्याकरणशास्त्र का इतिहास	4

Semester - 4
Paper – 1
Course Code SAN - 560
Title of Course -वैदिकस्वराःवेद-विज्ञानञ्च

- इकाई -1 वैदिकस्वर-विज्ञानम्
इकाई -2 धातुस्वराःसमासस्वराश्च
इकाई - 3 तिङन्तस्वराःफिद्वूत्राणि च
इकाई - 4 वैदिकव्याख्यापद्धतयः
इकाई -5 वेदेषुविज्ञानम्

सन्दर्भग्रन्थाः -

- स्वरप्रक्रियाप्रकाश, वामदेवमिश्र, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, १९९९
- वैदिक-स्वरबोध, ब्रजबिहारीचौबे, कात्यायनवैदिकसाहित्यप्रकाशन, २००४
- वैदिक-स्वर-मीमांसा, युधिष्ठिरमीमांसक, रामलालकपूरट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा, २००९
- वैदिकवाङ्मयमेंविविधस्वराङ्गनप्रकार, रामलालकपूरट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा, २००९
- संस्कृतवाङ्मयमेंविज्ञानकाइतिहास, राष्ट्रियशैक्षिकअनुसंधानऔरप्रशिक्षणपरिषद्, नयीदिल्ली, २०१८
- वेदऔरवेदार्थ, ज्वलन्तशास्त्री, घूडमलप्रह्लादकुमारआर्यधर्मार्थन्यास, हिन्दौनसिटी, राजस्थान २०१०
- वेदोंकीवर्णनशैलियाँ, रामनाथवेदालंकार, घूडमलप्रह्लादकुमारआर्यधर्मार्थन्यास, हिन्दौनसिटी, राजस्थान
- वेदव्याख्यापद्धतयः, शशितिवारी, प्रतिभाप्रकाशन, दिल्ली, २०१४
- वैदिकविज्ञानऔरभारतीयसंस्कृति, गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, राष्ट्रभाषापरिषद्, १९६०
- वेदविज्ञान-चिन्तन, ब्रजबिहारीचौबे, कात्यायनवैदिकसाहित्यप्रकाशन, होशियारपुर, २००५
- भारतीयविज्ञानवैभवम्, दीनानाथझुनझुनवाला, पिल्ग्रिम्सपब्लिशिंग, वाराणसी, २००९
- वेदोंमेंविज्ञान, कपिलदेवद्विवेदी, विश्वभारतीअनुसंधानपरिषद्, ज्ञानपुर (भदोही), २०१४

Paper- II
Course Code - SAN – 561
Title of Course –शतपथब्राह्मणयज्ञविज्ञानञ्च

- इकाई -1 ब्राह्मणग्रन्थानांपरिचयात्मकम्अध्ययनम्
इकाई -2 वैदिकयज्ञानांकर्मकाण्डानाञ्चसामान्यपरिचयम् (अग्निहोत्रम्, अग्निष्टोमम्, दर्शपौर्णमासंतथा वैदिकसंस्काराः)
इकाई - 3 शतपथब्राह्मणम्- प्रथमकाण्डं-व्रतोपायनम्, अपांप्रणयनम्, पात्रासादनम्,
हविर्निर्वापः, अवघातः,
इकाई - 4 शतपथब्राह्मणम्- प्रथमकाण्डं-उत्पवनम्, पेषणम्, कपालोपधानम्, आज्यनिर्वापः,
संयवनम्
इकाई -5 पारस्करगृह्यसूत्रम्-वैदिकसंस्काराः

सन्दर्भग्रन्थाः:-

- माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणम् (श्रीमत्सायणाचार्यविरचित- वेदार्थप्रकाशाख्यभाष्यसहितम्), युगलकिशोरमिश्र, सम्पूर्णनन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, २००७
- पारस्करगृह्यसूत्रम्, एम. जी. बाक्रे (सम्पादक), मुंशीराममनोहरलाल, बम्बई, १९८२
- आपस्तम्बीय कर्म-मीमांसा, प्रयागनारायणमिश्र, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, २०१६
- आपस्तम्बीय श्रौतयागमीमांसा, प्रयागनारायणमिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २००६
- कर्मकौमुदी, बृजेशकुमारशुक्ल, नागप्रकाशक, नईदिल्ली, २००१
- वैदिकयज्ञसंस्थाऔरविज्ञान, ओमप्रकाशपाण्डेय, महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन, २००४
- शतपथ-शेवधि, रेनू के., शर्मा, रेवाप्रकाशन, नईदिल्ली, २०१६

Paper- III

Course Code- SAN - 562

Title of Course -निरुक्तबृहद्देवता च

इकाई -1 निरुक्तम्-द्वितीयोऽध्यायः

इकाई -2 निरुक्तम्-सप्तमोऽध्यायः

इकाई -3 वैदिकछन्दांसिज्योतिषं च

इकाई - 4 बृहद्देवता-प्रथमोऽध्यायः-प्रथमतः -त्रिंशत्पर्यन्तम्

इकाई -5 समीक्षात्मकम्अध्ययनम्

सन्दर्भग्रन्थाः -

- ऋग्वेदप्रातिशाख्यमूलांशविरचित, (उब्बटभाष्य-संवलितम्), वीरेन्द्रकुमारवर्मा, चौखम्भासंस्कृतप्रतिष्ठान, दिल्ली
- यास्ककृतनिरुक्त, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्भाविद्याभवन, वाराणसी, १९६१
- *The Nighantu and The Nirukta*, Lakshman Sarup, Motilal Banarasadass, Delhi, 1967
- यास्कप्रणीतनिरुक्तम्, (निघण्टुसहितम्) (दोभाग), सीतारामशास्त्री, परिमलपब्लिकेशनमदिल्ली, तृतीयसंस्करण २००२
- शौनकीयबृहद्देवता, रामकुमारराय, चौखम्भासंस्कृतसंस्थान, २०१९
- आथर्वणज्योतिषम् -, भारतीय विद्या प्रकाशन (टीकोपेतम् - देवदत्तप्रभाहिन्दी), वाराणसी, २००३
- ज्योतिर्विज्ञानसन्दर्भसमालोचनिका, बृजेशकुमारशुक्ल, प्रतिभाप्रकाशन, दिल्ली, २०१३
- छन्दःसूत्रम्, पिङ्गलकृत, कपिलदेवद्विवेदीऔरश्यामलालसिंह, विश्वविद्यालयप्रकाशन, वाराणसी, २०१९
- वैदिक-छन्दोमीमांसा, युधिष्ठिरमीमांसक, रामलालकपूरट्रस्ट, अमृतसर, १९५९

Elective Course (Group B - Literature)

Paper I

Course Code: SAN-563

Title of Course-गद्यकाव्यं पद्यरचना च

Course Contents-

Unit:1 –शिवराजविजयम्-प्रथमनिःश्वासः) हिन्दीभाषया अनुवादः

Unit:2 –शिवराजविजयम् प्रथमनिःश्वासः आलोचनात्मकप्रश्नाः

Unit :3 –हर्षचरितम्- पञ्चमोच्छ्वासः हिन्दीभाषया अनुवादः

Unit:4 –वृत्तरत्नाकरः- तृतीयोऽध्यायः

Unit:5 –संस्कृतपद्यरचना

Recommended Readings-

- शिवराजविजयः, रमाशङ्कर मिश्र, , चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2010
- शिवराजविजयः, श्रीरामजीपाण्डेय, व्यास प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- हर्षचरितम्, (5-8 उच्छ्वासात्मकः) श्रीमोहनदेवपन्तः, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी, 1985
- हर्षचरितम्, श्री जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1946
- हर्षचरितम्, शिवनाथ पाण्डेय, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
- The Harṣa-Carita of Bāṇa, Translated by E.B. Cowell and F.W. Thomas, Motilal Banarasidas Publishers, Delhi, 1968
- वृत्तरत्नाकरम्-श्रीधरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2016
- वृत्तरत्नाकरः, केदारनाथ शर्मा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1980

Paper II

Course Code: SAN-564

Title of Course –रसगङ्गाधर :नैषधीयचरितञ्च

Course Contents-

रसगङ्गाधरः रसप्रकरणपर्यन्तः

Unit1 –प्रारम्भतः काव्यस्वरूपपर्यन्तः

Unit:2 – काव्यभेदाः काव्यकारणञ्च

Unit :3 – (रसप्रकरणम्-समाप्तिपर्यन्त) म्

नैषधीयचरितम्

Unit :4 –आरम्भतः पञ्चाशतश्लोकपर्यन्तम् हिन्दीभाषया अनुवादः संस्कृतव्याख्या च

Unit:5 –एकपञ्चाशतश्लोकतः सर्गसमाप्तिपर्यन्तम्)हिन्दीभाषया अनुवादःआलोचनात्मकप्रश्नाश्च

Recommended Readings-

- रसगङ्गाधर, प० मदनमोहन झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण, 1998
- रसगङ्गाधर, श्रीनारायण मिश्र, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण, 2002
- रसगङ्गाधर, प० केदारनाथ ओझा, सरस्वती भवन ग्रंथमाला, वाराणसी, संस्करण, 1981
- रसगङ्गाधर एवं नव्यन्याय भाषाप्रविधि (रसनिरूपणपर्यन्त), अनिल प्रताप गिरि, भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2010

- रसगंगाधर एवं नव्यन्याय भाषाप्रविधि(रस,गुण एवं अलंकारपर्यन्त), अनिल प्रताप गिरि, भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018
- नैषधीयचरितम्, तारिणीश झा, रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद, संस्करण, 2012
- नैषधीयचरितम्, राजेश्वर शास्त्री मूसलगांवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,संस्करण,2011
- नैषधीयचरितम्, शेषराज शर्मा 'रेग्मी' चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,संस्करण,2016
- नैषधीयचरितम्, दीपशिख मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- नैषधीयचरितम्, सूर्यदेव शास्त्री, चौखम्बा ओरियन्टलिया, वाराणसी, संस्करण,1975

Paper III

Course Code: SAN-565

Title of Course – महाकाव्यं चम्पूकाव्यञ्च

Course Contents-

शिशुपालवधम्

Unit :1 –प्रथमसर्गः हिन्दीभाषया अनुवादः संस्कृतव्याख्याच

Unit:2 –आलोचनात्मकप्रश्नाः

नलचम्पूः

Unit:3 –प्रारम्भतः त्रिंशत्श्लोकपर्यन्तम्) हिन्दीभाषया अनुवादःसंस्कृतव्याख्या ,च

Unit:4 –एकत्रिंशत्श्लोकतः चतुष्पष्टिश्लोकपर्यन्तम्पद्य) द्वयस्य हिन्दीभाषया अनुवादः

Unit :5 - प्रथमश्लोकतः चतुस्त्रिंशत्श्लोकंयावत् स्थिताः गद्यांशाःहिन्दीभाषया अनुवादःसंस्कृतव्याख्या , च

Recommended Readings-

- शिशुपालवधम्, तारिणीशझा, रामनारायण ज्ञानविजयकुमार,इलाहाबाद, 2001
- शिशुपालवधम्,डॉ. वी .कृतूलकर ., मेनका प्रकाशन, पुणे,2015
- शिशुपालवधम्, डॉअशोक चन्द्र गौड शास्त्री ., चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,1985
- शिशुपालवधम्, डॉरामजी लाल शर्मा ., चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,1998
- शिशुपालवधम्,डॉ. रमाशंकर मिश्र, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1999
- नलचम्पूः,श्री परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2005
- नलचम्पूः, डॉनिरंजन मिश्र ., हंसा प्रकाशनजयपुर, 2019
- नलचम्पूः, धारादत्त शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी,2000
- नलचम्पूः, श्री रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी,2013
- नलचम्पूः, आचार्य धुरन्धर पाण्डेय, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी,2005

Semester-IV

Elective Course (Group D - Philosophy)

Paper I

Course Code - SANS-566

Title of Course – न्याय-वैशेषिकदर्शनम्

Course Contents:

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

Unit I- पदार्थकारणयोर्निरूपणम्	12 अंकाः
Unit II-अन्यथासिद्धप्रत्यक्षप्रमाणयोर्निरूपणम्	12 अंकाः
Unit III-लौकिकालौकिकसन्निकर्षनिरूपणम्	12 अंकाः

प्रशस्तपादभाष्यम्

Unit IV-आकाशनिरूपणम्, मनोनिरूपणम्, पाकजप्रक्रियानिरूपणम्, सृष्टिसंहारप्रक्रियानिरूपणम्	12 अंकाः
Unit V-सामान्यविशेषसमवायानां निरूपणम्	12 अंकाः

Recommended Readings:

- वैशेषिकसूत्रम्, कणादः. सं० नारायण मिश्रः. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, 1966.
- प्रशस्तपादभाष्यम् (न्यायकन्दली टीका), प्रशस्तपादः. व्या० पण्डित श्री दुर्गाधर झा शर्मा. वाराणसी: सम्पूर्णानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालय, 1997.
- प्रशस्तपादभाष्यम्, (सूक्ति-सेतु-व्योमवतीटीकाभिः सहितम्). सं० गोपिनाथकविराजः दुण्डिराजशास्त्री. वाराणसी: चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, 1983.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य. गजानन शास्त्री मुसलगावकर (व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, , 1991.
- न्याय सिद्धान्तमुक्तावली. आचार्य लोकमणि दाहाल. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री (व्याख्याकार(. दिल्ली: मोतीलालबनारसीदास, 2000.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य. कृष्णवल्लभाचार्य (व्याख्याकार(. वाराणसी: चौखम्बासंस्कृत संस्थान, , 1990.
- कुमार, प्रो० शशिप्रभा वैशेषिक दर्शन में पदार्थनिरूपण. दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय: प्रकाशन विभाग, 1992.
- Mishra, Umesh. *Nyaya-Vaisesika Conception of Matter in Indian Philosophy* (reprint). Delhi: Bharatiya Kala Prakashan, 2006.
- Prasastapadabhasyam of Prasasta Devacharya : with commentaries (up to Dravya). M. M. Pt. Gopinath Kaviraj (ed.). Chaukhamba Amarabharati Prakashan.

Elective Course (Group D - Philosophy)
Paper II
Course Code - SANS-567
Title of Course – शङ्कराचार्य वेदान्तः योगदर्शनञ्च

Course Contents:

योगसूत्रम्-व्यासभाष्यसहितम्

Unit I-साधनपादस्य सूत्रसंख्या 12 तः 28 पर्यन्तम् 12 अंकाः

Unit II-साधनपादस्य सूत्रसंख्या 29 तः 55 पर्यन्तम् 12 अंकाः

विभूतिपादस्य सूत्रसंख्या 1 तः 4 पर्यन्तम्

माण्डूक्योपनिषद्, माण्डूक्यकारिकोपेता

Unit III- उपनिषद्भागः 12 अंकाः

Unit IV- कारिकाभागस्य अध्यायसंख्या 1 तः 2 पर्यन्तम् 12 अंकाः

Unit V- कारिकाभागस्य अध्यायसंख्या 3 तः 4 पर्यन्तम् 12 अंकाः

Recommended Readings:

- पातञ्जलयोगदर्शनम् – पतञ्जलि. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव (व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 1993.
- पातञ्जलयोगदर्शनम् – पतञ्जलि. स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक' (व्याख्याकार). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1974.
- योगसूत्रभाष्यम्. स्वामी सच्चिदानन्द योगी सरस्वती, सच्चिदानन्द योग मिशन, दिल्ली
- गौडपादीयकारिकोपेता-माण्डूक्योपनिषद् (माण्डूक्यमनीषा हिन्दीव्याख्या शाङ्करभाष्य विभूषिता). प्रो० कौशलकिशोर श्रीवास्तव. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन 2017.
- माण्डूक्योपनिषद्. गोरखपुर: गीताप्रेस.
- ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्यार्थ). गोरखपुर: गीताप्रेस.
- Gaudapādakārikā- Gaudapāda. R.D. Karmarkar (ed. & Trans.). Poona: Bhandarkar Oriental Reserach Institute Poona, 1953
- Yogasūtram- Patanjali. J.R. Ballantyne (ed.). Delhi: Pious Book Corp., 1985
- Prabhavananda, Swami and Isherwood, Christopher. The yoga aphorisms of Patañjali (Chapter-IV). Madras: Sri Ramakrishna Math, 1953.
- Verma, G.L. (2009). Pātañjala yoga sūtras. New Delhi: Chowkambha Sanskrit Series.
- Deussen, Paul. *Philosophy of Upanishads*. Calcutta: Education Enterprise, 1972.

- Nakamura, H. *A history of early Vedānta philosophy* (Part one). Delhi: Motilal Banarsidass, 1983.

Semester-IV
Elective Course (Group D - Philosophy)
Paper III
Course Code - SANS-568
Title of Course – शाङ्करवेदान्तः

Course Contents:

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्

Unit I-आनन्दमयाधिकरणम्	12 अंकाः
UnitII-द्वितीयाध्यायस्य प्रथमपादः	12 अंकाः
1- स्मृत्याधिकरणम् 2- विलक्षणत्वाधिकरणम् 3- नप्रयोजनत्वाधिकरणम्	
Unit III-1- वैषम्यनैर्घृण्याधिकरणम् 2- अभावाधिकरणम् 3- एकस्मिन्नसंभवाधिकरणम्	12 अंकाः
Unit IV-1- पत्याधिकरणम् 2- उत्पत्त्यसंभवाधिकरणम्	12 अंकाः
Unit V- चतुर्थ-अध्यायस्य चतुर्थ पादः	12 अंकाः

Recommended Readings:

- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. स्वामी हनुमान् जी षड्भास्त्री(व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, 1964.
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. सत्यानन्दसरस्वती(व्याख्याकार). सत्यानन्दीदीपिकासहित. वाराणसी: गोविन्दमठ, 1978.
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य. कामेश्वरमिश्र(व्याख्याकार). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, 1976.
- Alston, A.J. *Śaṅkara on the Absolute*. Shanti Sadan, 1981.
- BrahmasutramChatussutri, Sankarabhasyopetam, MotilalBanarsidas Publishers Pvt. Ltd., Delhi.
- Devaraja, N.K. *Introduction to Śaṅkara's Theory of Knowledge*. Delhi: M.L.B.D, 1972.
- Gambhirananda, Swami (Trans.). *Brahma Sūtra Bhāṣya of Śaṅkarācārya*. Calcutta: Advaita Ashrama, 1993.
- Swami Sivananda. *Brahmasutra*. Delhi: MotilalBanarsidas, 1977.
- Sharma, H.D. *ŚrīŚaṅkara-BhāṣyasahitāBrahmasūtraCatuḥsūtrī*. Oriental Series no. 70. Pune: Poona Oriental Book Agency, 1940.
- Pandit P. Gopalan Nair, Brahmasutram. Trissur: The Ethos, 1994.

- Prof. G. Balakrishnan Nair – Brahmasutrabhashyam. Kerala, Trivandrum: Kerala Bhasha Institute.

Semester-IV

Paper IV

Course Code - SANS-513

Title of Course –नव्यन्यायभाषाप्रविधि: भाषादर्शनञ्च
(सर्वेषां छात्राणां कृते अनिवार्यम्)

Course contents:

Unit- I नव्यन्यायभाषाप्रदीपः (धर्म-सम्बन्धपर्यन्तम्) । 12 अङ्काः

Unit- II भर्तृहरिकृत-वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) प्रथमकारिकातः दशकारिका-पर्यन्तम् । 12 अङ्काः

Unit- III भर्तृहरिकृत-वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) एकादशकारिकातः द्वाविंशतिकारिका-पर्यन्तम् ।

12 अङ्काः

Unit-IV विश्वनाथन्यायपञ्चाननकृत-न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां शाब्दबोधप्रक्रिया शक्तिग्रहश्च ।

12 अङ्काः

Unit-V न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-पदभेदलक्षणविवेचनं वाक्यस्वरूपविचारश्च । 12 अङ्काः

Recommended Readings:

- नव्यन्याय-भाषाप्रदीप, म.म. महेशचन्द्र, अनु. डॉ. उज्ज्वला झा, श्रुतभवन संशोधन केन्द्र पुणे, प्रथम संस्करण 2018 ई.
- महामहोपाध्याय-श्रीमहेशचन्द्रन्यायरत्न-प्रणीतः नव्यन्यायभाषाप्रदीपः (Brief Notes on the Modern Nyāya System of Philosophical and Technical Terms), सं.-आचार्य विजय-जगच्चन्द्रसूरीश्वरः, Parshva Publication, 102, Nandaon Complex, Mithakhali Gam, Ahmedabad-380006.
- A Primer of Navya Nyāya Language and Methodology, (Navya-Nyāya-Bhāṣā-Pradīpa, by Mm Mahesha Chandra Nyayaratna), translated by Ujjwajala Jha, published from The Asiatic Society, 1 Park street Kolkata-016, 2004
- Navya-Nyāya System of Logic(some basic theories& techniques), by Dinesh Chandra Guha, published from Bharatiya Vidyā prakāśan, Vārānasī, 1968
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास नवम-खण्ड (न्याय) प्रधान सं. पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय. सम्पादक पं. गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ; 1999 ई.
- वाक्यपदीयम्, ब्रह्मकाण्डम्, पं० रघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्री टीका सहित, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1997 ई.

- Vakyapadiya of Bhartiyhari, Edited by K.V. Abhyankar and V.P. Limaye, Poona, 1965 Vākyapadiya of Bharthari with Vetti and Paddhati, Edited by K.A. Subrahmaniam Iyer, Poona, 1966
- अय्यर, के.ए.एस. भर्तृहरि का वाक्यपदीयम्, अनुवादक रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1981 ई.
- अवस्थी, शिवशङ्कर वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1997 ई.
- शर्मा, वीरेन्द्र वाक्यपदीय-सम्बन्धसमुद्देशः एक विवेचनात्मक अध्ययन, होशियारपुर, 1977 ई.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य, व्या. गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर एवं लोकमणि दहाल, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2011 ई.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य, व्या. श्रीकृष्णवल्लभाचार्य, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 2021 ई.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य, व्या. सूर्यनारायण शुक्ल, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, 1991 ई.
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य, व्या. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि., 2017 ई.

Semester-IV

Paper V

Course Code - SANS-514

Title of Course –साहित्यशास्त्रं शङ्करोत्तरवेदान्तश्च

(सर्वेषां छात्राणां कृते अनिवार्यम्)

Course Contents:

Unit- I राजशेखरकृतकाव्यमीमांसायाः-द्वितीयोऽध्यायः ।

Unit- II काव्यशास्त्रीयाः प्रवृत्तयः-रस-रीति-अलङ्कार-वक्रोक्ति-ध्वनि-औचित्यसम्प्रदायानां सैद्धान्तिकः परिचयः

Unit- III नाट्यशास्त्रम् – द्वितीयोऽध्यायः ।

Unit-IV योगदर्शनम्, अष्टाङ्गयोगः, ईश्वरः

Unit-V शङ्करोत्तरवेदान्तः - विशिष्टाद्वैतम् अन्ये च वेदान्तसम्प्रदायाः

Recommended Readings:

- काव्यमीमांसा, राजशेखर, सं. राय गङ्गासागर; चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2010 ई.
- काव्यमीमांसा, राजशेखर, सं. एवं व्या. त्रिपाठी श्रीकृष्णमणि; चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
- काव्यमीमांसा, राजशेखर, अनु. केदारनाथ शर्मा सारस्वत; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 2000 ई.
- काव्यमीमांसा, राजशेखर, सं. एवं संस्कृत व्या. आचार्य विजयमित्रशास्त्री गौड़ हिन्दी अनु. डॉ. हरिदत्त शास्त्री; भारतीय विद्या प्रकाशन , 2016 ई.

- काव्यमीमांसा, राजशेखर, सं. एवं व्या. यमुनारामत्रिपाठी; शारदा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 1996 ई.
- संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, म.म. पी. वी. काणे, अनु. इन्द्रचन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, पञ्चम संस्करण, 2015 ई.
- संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, सुशील कुमार डे, अनु. श्री मायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, द्वितीय संस्करण, 1988 ई.
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास अष्टम खण्ड (काव्यशास्त्र) प्रधान सं. बलदेव उपाध्याय. सम्पादक स्व. आचार्य करुणापति त्रिपाठी, सहसम्पादक वायुनन्दन पाण्डेय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ; 2001 ई.
- नाट्यशास्त्रम्, भरत, सम्पादक बटुकनाथ शर्मा एवं बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, वि.सं. 2062
- नाट्यशास्त्रम्, भरत, सम्पादक रविशङ्कर नागर एवं के. एल. जोशी, परिमल पब्लिकेशन दिल्ली, 2003 ई.
- नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, सम्पा. एवं अनु. पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, 1992 ई.
- पातञ्जल-योगदर्शनम्, पतञ्जलि, व्या. रमाशङ्कर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी,
- पातञ्जल-योगदर्शनम्, पतञ्जलि, गीताप्रेस गोरखपुर, 2023 ई.
- पातञ्जलयोगदर्शनम्, पतञ्जलि, व्या. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2019 ई.
- शङ्करोत्तर वेदान्त, दलसिंगार सिंह, आयुष्मान पब्लिकेशन हाऊस दिल्ली, 2022

Semester -IV

Paper -IV

Course Code – SAN-663

Title of Course – वाक्यपदीयं पाणिनीयप्रविधिश्च

पाठ्यचर्या विवरण :

यह पाठ्यचर्या संस्कृत व्याकरण के दर्शन पक्ष को प्रतिपादित करते हुए शब्द ब्रह्म, व्याकरण के प्रयोजन-शब्दार्थ, सम्बन्धस्फोट एवं तद्धेद, ध्वनि एवं तद्धेद भाषा के स्तर आदि विषयों, तथा अष्टाध्यायी संरचना के सिद्धान्तों को अवगमन कराने में सक्षम है ।

अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

(Course Learning Outcomes)

- संस्कृत व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को समझने में सक्षम होगा ।
- शब्द ब्रह्म स्वरूप को जानते हुए वाक् चतुष्टय की संकल्पना को जानकर व्याकरण दर्शन एवं अन्य दर्शनों के अन्तः सम्बन्ध को जानने में सक्षम होगा ।
- शब्दार्थ सम्बन्ध को स्पष्ट रूप से जानते हुए व्याकरण शास्त्र की प्रवृत्ति को समझने में सक्षम होगा
- पाणिनीय प्रविधि अथवा अष्टाध्यायी संरचना के सिद्धान्तों को समझ सकेंगे

इकाई - १ - वाक्यपदीयस्य स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च, टीका: टीकाकाराश्च,
भर्तृहरे: व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च, वाक्यपदीयस्य दार्शनिकी
पृष्ठभूमिः, वाक्यपदीयं भाषादर्शनञ्च, भाषायाः स्तराः

इकाई -२ - वाक्यपदीयम् १-२३ कारिका: (स्वोपज्ञवृत्तिसहिताः) १२ अङ्काः
शब्दब्रह्म, व्याकरणस्य प्रयोजनानि, शब्दार्थ-सम्बन्धाः

इकाई -३ - वाक्यपदीयं २४-५३ कारिका: (स्वोपज्ञवृत्तिसहिताः) १२ अङ्काः
द्विविधः शब्दः, स्फोटस्य स्वरूपम्

इकाई -४ - वाक्यपदीयं ५४-९१ कारिका: (स्वोपज्ञवृत्तिसहिताः) १२ अङ्काः
स्फोटः तद्भेदाश्च, ध्वनिः तद्भेदाश्च

इकाई -५ - पाणिनीयप्रविधिः - अष्टाध्यायीसंरचना, सूत्रस्य लक्षणं १२ अङ्काः
भेदाश्च, सूत्रार्थप्रकारः, अनुवृत्तिविचारः, वैकल्पिकविचारः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. वाक्यपदीयम्, आचार्य-भर्तृहरिप्रणीतप्रथमो) भागः, ब्रह्मकाण्डम् पद्मश्री- पण्डितरघुनाथ शर्मा- व्याख्याकारः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य वाराणसी- तृतीयं संस्करणम्, 1988
2. व्याकरण की दार्शनिक भूमिका, डॉ. सत्यकाम वर्मा, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली-६ प्रथम संस्करण, 1971
3. व्याकरण दर्शन को कैयट का योगदान, डा .रामप्रकाश वर्णी ,परिमल पब्लिकेशन्स ,दिल्ली ,प्रथम संस्करण , 2005
4. Vakyapadiya of Bhartrihari, Edited by K.V.Abyankaran & V.P.Limaye, Poona, 1965
5. Vakyapadiya of Bhartrihari, with Vritti & Paddhati, Edited by K.A.Subrahmanian Iyer, Poona
6. भर्तृहरि, के ए. सुब्रह्मण्यम् अय्यर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, द्वितीय संस्करण 1991
7. पाणिनीय अष्टाध्यायी के रचना सिद्धान्त, डॉ. विशन लाला गौड व्योमशेखर, लोकालोक प्रकाशन, साहिबाबाद, 1982

Semester -IV

Paper -V

Course Code – SAN-664

Title of Course – नव्य व्याकरणम्

पाठ्यचर्या विवरण :

(Description of Course)

यह पाठ्यचर्या नव्यव्याकरण के अन्तर्गत परिभाषेन्दुशेखर, सिद्धान्तकौमुदी एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ पर आधारित है । पाठ्यचर्या परिभाषा परिभाषाओं के कार्य, परिभाषाओं के प्रकार , तथा संस्कृत व्याकरण की तद्धित प्रक्रिया एवं सनाद्यन्त प्रक्रिया के ज्ञान को अवगत कराने में सक्षम है ।

अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

(Course Learning Outcomes)

- संस्कृत व्याकरण की पारिभाषिक पद्धतियों को जान सकेगा ।

- परिभाषाओं के कार्य को जानकर शास्त्र में प्रयोग करने में सक्षम होगा ।
- सिद्धान्तकौमुदी की तद्धित प्रक्रिया भाग को जानकर तत्सम्बन्धी पदों की व्युत्पत्ति करने में सक्षम होगा ।
- सिद्धान्तकौमुदी की सनाद्यन्त प्रक्रिया भाग को जानकर तत्सम्बन्धी पदों की व्युत्पत्ति करने में सक्षम होगा ।
- पाणिनीय व्याकरण की पद सम्बन्धी व्यवस्थाओं को जानने तथा प्रयोग करने में सक्षम होगा ।

इकाई – १ – नव्यव्याकरणस्य परिचयः, आरम्भः विकासश्च, परिभाषेन्दुशेखरस्य
परिचयः वैशिष्ट्यञ्च , परिभाषेन्दुशेखरस्य मुख्याः चिताः परिभाषाः-
१- व्याख्यानतो.(1) २- यथोद्देशम्.(2) ३-कार्यकालम्.(3)
४- अनुबन्धविषयिकाः परिभाषाः (4-8)
१२ अङ्काः

इकाई-२- मुख्याः चिताः परिभाषाः ५- यदागमा.(11) ६- निर्दिश्यमान. (12)
७- यत्रानेकविधम्. (13) ८- अर्थवत्प्रहणे.(14) ९- गौणमुख्ययोः.(15)
१०-एकयोगनिर्दिष्टानां.(17) ११- प्रत्ययग्रहणेयस्मात्सः. (23)
१२- संज्ञाविधौ प्रत्ययग्रहणे.(27) १३- कृद्ग्रहणेगतिकारक.(28)
१४-पूर्वपरनित्या.(38) १५-सकृद्गतौ.(40) १६-असिद्धं बहिरङ्ग.(50)
१७- प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्ग.(72) १८- सन्निपातलक्षणो विधि.(86)
१९- उपपदविभक्तेः(103) २०- ज्ञापकसिद्धं न सर्वत्र (125) १२ अङ्काः

इकाई -३ - वै. सिद्धान्तकौमुदी-अपत्यार्थप्रकरणम्
(सूत्र सं.1072-1201) १२ अङ्काः

इकाई -४ - वै.सिद्धान्तकौमुदी मत्वर्थीयप्रकरणम्
(सूत्र सं.1802- 1946) १२ अङ्काः

इकाई -५ - लघुसिद्धान्तकौमुदी-णिजन्त-सनन्त-यङन्त-यङ्लुगन्त-
नामधातुप्रक्रियाः १२ अङ्काः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. परिभाषेन्दुशेखर, नागेश भट्ट, व्या. आचार्य विश्वनाथ मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016
2. पारिभाषिक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा
3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, डॉ. रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 1996
4. परिभाषेन्दुशेखर नागेश भट्ट, व्या. डॉ. पर्णदत्त सिंह, इन्दु प्रकाशन वाराणसी, 1987
5. वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी, चौखम्बा भारतीय प्रकाशन , वाराणसी , 1990

6. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी म. म. पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी तथा म. म. पं. परमेश्वरानन्द शर्मा भास्कर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली - 110007, पुनर्मुद्रण 1989
7. . Vasu, S.C. Siddhantakaumudi (2 Vols.), Text and English Translation, 2021 , Parimal publication, delhi
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी प्रकाशन (द्वितीय भाग) भीमसेन शास्त्री .व्या ,वरदराज ,537 लाजपतराय मार्किट दिल्ली , ,2001

Semester -IV

Paper -VI

Course Code – SAN-665

Title of Course – प्राचीनव्याकरणं व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः

पाठ्यचर्या विवरण :

यह पाठ्यचर्या प्राचीन व्याकरण एवं व्याकरण शास्त्र के इतिहास पर आधारित है । पाठ्यचर्या प्रथम पाद के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक ज्ञान को तथा व्याकरण शास्त्र के इतिहास को अवगत कराने में सक्षम है ।

अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

(Course Learning Outcomes)

- काशिकावृत्ति का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य को जान सकेगा ।
- काशिका के प्रथम पाद के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक ज्ञान को प्राप्त कर सकेगा ।
- काशिका के परस्मैपद प्रक्रिया भाग को जानकर तत्सम्बन्धी पदों की व्युत्पत्ति करने में सक्षम होगा ।
- काशिका के आत्मनेपद प्रक्रिया भाग को जानकर तत्सम्बन्धी पदों की व्युत्पत्ति करने में सक्षम होगा ।
- व्याकरण शास्त्र के इतिहास को अवगमन करने में सक्षम होगा ।
- संस्कृत व्याकरण शास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों एवं व्याकरण की विभिन्न पद्धतियों को जानेगा ।

इकाई – १ – काशिकावृत्ते: स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्च, अष्टाध्याय्याः

सूत्रानुसारिणी परम्परा, प्रत्याहारसूत्राणि,
प्रथमोऽध्यायः, प्रथमः पादः १- २० सूत्राणि

१२ अङ्काः

इकाई -२ - काशिकावृत्तिः, प्रथमोऽध्यायः, प्रथमः पादः

२१ - ७४ सूत्राणि

१२ अङ्काः

इकाई – ३- काशिकावृत्तिः, प्रथमोऽध्यायः, तृतीयः पादः

१२ – ९३ सूत्राणि (परस्मैपदात्मनेपदप्रकरणम्)

१२ अङ्काः

इकाई-४ - पाणिनेः पूर्ववर्तिनः परवर्तिनश्च वैयाकरणाः

पाणिनीयेतराः व्याकरणसम्प्रदायाश्च

१२ अङ्काः

इकाई -५ - मुनित्रयव्यक्तित्वं कर्तृत्वञ्च, कालनिर्धारणम् ,
पाणिनीयपरम्परायाः दार्शनिकाः आचार्याः -
भर्तृहरिः, भट्टोजिदीक्षितः, कौण्डभट्टः, नागेश इत्यादयः ।

१२ अङ्काः

अध्ययन हेतु आधार/सन्दर्भ ग्रन्थ

(Text books/Reference/Resources)

1. काशिका, वामन-जयादित्य, सं. जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, तारा प्रिंटिंग वर्क्स, 1985
- .2मीमांसक, युधिष्ठिर – संस्कृतव्याकरणशास्त्र का इतिहास, सोनीपत, 1974
- .3वर्मा, सत्यकाम – संस्कृतव्याकरण का उद्भव और विकास, दिल्ली
4. Vasu, S.C. Ashtadhyayi of Panini (2 Vols.), Text and English Translation, 2017, Parimal publication, delhi
- .5अग्निहोत्री, प्रभुदयाल-पतञ्जलिकालीन भारतवर्ष, पटना, 1963
- .6अग्रवाल, वासुदेवशरण –पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पटना, 1969
7. Belvalkar, S.K. Systems of Sanskrit Grammar, Delhi.
8. Cardona, George. Panini: A Survey of Research, Delhi, 1980
9. Ray, Bidyut Lata. Panini to Patanjali: A Grammatical March, Delhi, 2004 Schafe, H. Grammatical Literature (A History of Indian Literature

Semester-4

Paper IV

(ALL GROUP)

Course Code SAN-513

Title of Course - निबन्ध, वाक्यपदीयम् शब्द दर्शन

(सभी छात्रों के लिये अनिवार्य)

- | | |
|---|--------|
| इकाई - 1 - संस्कृत भाषा में निबन्ध । | 12 अंक |
| इकाई - 2 - भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) कारिका एक से दस तक । | 12 अंक |
| इकाई - 3 - भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) कारिका ग्यारह से बाइस तक । | 12 अंक |
| इकाई - 4 - विश्वनाथन्यायपञ्चाननकृत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-शाब्दबोध-प्रक्रिया तथा | 12 अंक |

शक्तिग्रह ।

इकाई - 5 - न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - पदभेद, लक्षण । विवेचन एवं वाक्य-स्वरूप-विचार । 12 अंक

Paper V

(ALL GROUP)

Course Code SAN-514

Title of Course – साहित्यशास्त्र एवं दर्शन

(सभी छात्रों के लिये अनिवार्य)

इकाई - 1 – काव्यमीमांसा- द्वितीय अध्याय 12 अंक

इकाई - 2 - काव्यशास्त्रीय प्रवृत्तियाँ - रस, रीति, अलंकार, वक्रोक्ति,
ध्वनि एवं औचित्य सम्प्रदायों का सैद्धान्तिक परिचय 12 अंक

इकाई - 3 – नाट्यशास्त्र – द्वितीय अध्याय 12 अंक

इकाई - 4 - योगदर्शन, अष्टाङ्गयोग, ईश्वर 12 अंक

इकाई - 5 - शङ्करोत्तर वेदान्त - विशिष्टाद्वैत एवं अन्य वेदान्त सम्प्रदाय 12 अंक

चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Outcomes)

कोड	पाठ्यक्रम का नाम	Course Objectives (CO)
SAN-613	निबन्ध, वाक्यपदीय एवं न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	1. संस्कृत निबन्धों की शैलियों का ज्ञान देना । 2. वाक्यपदीय की भाषादर्शनपरम्परा से विद्यार्थियों को - परिचित कराना । 3. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के माध्यम से भारतीय तर्कशास्त्र की बारीकियों का बोध कराना ।
SAN-614	कवि एवं काव्यशास्त्र तथा शांकोत्तर वेदान्त	1. संस्कृत कवियों और काव्यशास्त्र के मूल सिद्धान्तों की व्याख्या करना । 2. शांकोत्तर वेदान्त के प्रमुख प्रवाहों और चिन्तन पद्धतियों का अध्ययन कराना ।
Group-A (Veda)	स्वर वैदिकी अवेस्ता एवं / शतपथ ब्राह्मण / निरुक्त	1. वैदिक स्वर एवं ब्राह्मण ग्रंथों की व्याख्यापद्धति - समझाना । 2. वैदिक भाषाशास्त्र और प्राचीन फारसी अभिलेखों के तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित करना ।

कोड	पाठ्यक्रम का नाम	Course Objectives (CO)
Group-B (Sahitya)	उपन्यास एवं पद्यरचना रसगंगाधर एवं / चम्पू एवं गद्यकाव्य / रत्नावली	1. संस्कृत साहित्य के नवीन रूपों उपन्यास), गद्य, चम्पूसे (विद्यार्थियों को परिचित कराना। 2. रीतिकालीन ग्रंथों के रससिद्धान्त और नाट्यशास्त्र के - व्यावहारिक प्रयोग को समझाना।
Group-C (Darshan)	न्यायप्राक्शांकरवेदान्त एवं / वैशेषिक- शांकरवेदान्त / योगदर्शन	1. दार्शनिक परम्पराओं के मूल सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन। 2. शांकरदर्शन के तात्त्विक आधार और योगदर्शन के साधनमार्ग का विवेचन।-
Group-D (Vyakaran)	वैयाकरणभूषणसार / कौमुदी / काशिकावृत्ति	1. संस्कृत व्याकरण की परम्परागत एवं नव्य शैलियों का विश्लेषण। 2. पाणिनीय व्याकरण की व्याख्यान्याय -परम्परा और नव्य-शैली में उसका विवेचन।

Course Code	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5
SAN-613	3	3	3	3	2
SAN-614	3	3	3	3	3
SAN-660-662 (Veda)	3	3	3	1	1
SAN-663-665 (Sahitya)	3	3	2	3	3
SAN-666-668 (Darshan)	1	3	3	3	3
SAN-669-671 (Vyakarana)	3	3	1	3	1

प्र. मा. वि. प्र.
प्रो. (डॉ.) प्रदीप नारायण सिंह
आचार्य तथा अध्यक्ष
संस्कृत विभाग
बिड़लाबाद विश्वविद्यालय
प्रवसराज-281072, ह.प्र.